संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ दिसम्बर २००९
वर्ष : १९ अंक : ६
(निरंतर अंक : २०४)

सदैव शुभ संकल्प... मनुष्य जीवन व्यर्थ कर्म, व्यर्थ चीजों के पीछे खोने के लिए नहीं है। मैं परमात्मा का सनातन सपूत हूँ। उसीका ज्ञान पाकर उसीके माधुर्य में मस्त होते जा रहा हूँ।
ॐ आनंद...
ॐ माधुर्य...
ॐ शांति...
ॐ... ॐ...

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

बापूजी ! तुम सच्चे ब्रह्मज्ञानी, मेरे दिल की हालत जानी ।
अन्न-वस्तु तुम दीनी और सुनायी अमीमय बानी ।।

बोडेली (गुज.)

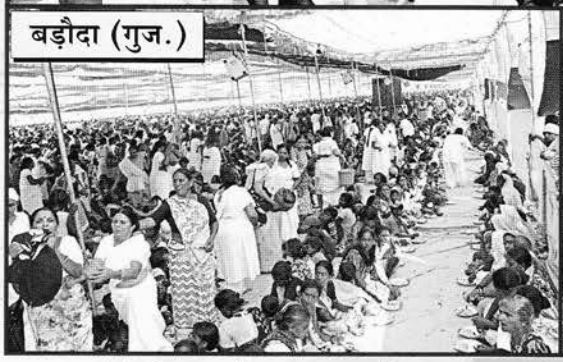
बड़ौदा (गुज.)

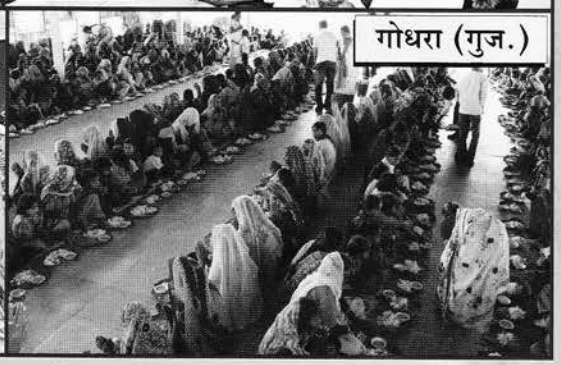
गोधरा (गुज.)

बोड़ेली व बड़ौदा (गुज.) में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में भंडारे हुए तथा अन्य स्थानों में पूज्यश्री के शिष्यों द्वारा भंडारे हुए जिनमें भोजन के साथ जीवनोपयोगी सामग्री का भी वितरण हुआ ।

अटरु, जि. बारां (राज.) में तथा बदलापुर (महा.) में बालभोज ।

सोमवती अमावस्या के अवसर पर सुंदरगढ़ (उड़ीसा) में बालभोज तथा आबु, जि. सिरोही (राज.) के गरीबों में भंडारा ।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०४)
१ दिसम्बर २००९ मूल्य : रु. ६-००
मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

Subject to Ahmedabad Jurisdiction

इस अंक में...

(१) भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म, संतों और मानवता पर हो रहा आक्रमण २
(२) क्या नरेन्द्र मोदी 'सेक्युलर' बनना चाहते हैं ? ४
(३) षड्यंत्र का पर्दाफाश ६
(४) अखंड आत्मदेव की उपासना ८
(५) कथा प्रसंग ९
 ❊ मोहे संत सदा अति प्यारे
(६) विचार मंथन १०
 ❊ कौन पास, कौन दूर ?
(७) सत्संग पराग १२
 ❊ कबिरा कुत्ता राम का...
(८) प्रेरक प्रसंग १६
 ❊ गुलाम कौन ?
(९) बहती अमृत की धार १७
(१०) परमहंसों का प्रसाद १८
 ❊ सामान्य में शांति, विशेष में विरोध
(११) परिप्रश्नेन १९
(१२) गुरु संदेश २१
 ❊ परमात्मा उसीका है...
(१३) विद्यार्थियों के लिए २२
(१४) गौ-महिमा २४
 ❊ गौ-रस : महत्ता एवं लाभ
(१५) विवेक जागृति २६
 ❊ प्रमादो हि मृत्युः
(१६) पर्व मांगल्य २८
 ❊ उत्तरायण की वेला में...
(१७) भक्तों के अनुभव २९
 ❊ बापूजी ने दी युक्ति, ऑपरेशन से मिली मुक्ति
(१८) शरीर स्वास्थ्य ३०
 ❊ मेवों द्वारा बल व स्वास्थ्यप्राप्ति
(१९) संस्था समाचार ३१

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	care WORLD	संस्कार	दिशा	MA TV (यूरोप)
रोज सुबह ७-३० बजे व रात्रि १०-३० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि ९-५० बजे	रोज सुबह ६-३० बजे	दोपहर १२-३० बजे (बुध व शनि)

❊ A2Z चैनल अब रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. 425
❊ care WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 977
❊ संस्कार चैनल 'बिग टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 651

भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म, संतों और मानवता पर हो रहा आक्रमण

जुलाई 2008 में आश्रम के अहमदाबाद गुरुकुल के दो बच्चों की आकस्मिक मृत्यु हुई । पोस्टमॉर्टेम रिपोर्ट से स्पष्ट हुआ कि मृत्यु नदी में डूब जाने से हुई है । गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त त्रिवेदी जाँच आयोग ने भी इस घटना को हत्या नहीं बताया है फिर भी गुजरात पुलिस की सी.आई.डी. क्राईम ब्रांच ने आश्रम के सात संचालकों-ट्रस्टियों पर धारा 114 व 304 के अंतर्गत मुकदमा दायर कर दिया । गुजरात हाईकोर्ट ने इस बेबुनियाद मुकदमे के लिए सी.आई.डी. क्राईम को कड़ी फटकार लगायी तथा साधकों पर कोई भी कार्यवाही करने पर फिलहाल रोक लगा दी है ।

घटनाक्रम की सत्यता यह होते हुए भी गुजरात के 'संदेश' अखबार द्वारा संत श्री आसारामजी बापू एवं आश्रम के विरुद्ध द्वेष एवं ईर्ष्या से प्रेरित होकर बिना सबूत के, झूठे, कपोलकल्पित, अश्लील समाचार एवं लेख छापे जाते रहे हैं । इससे करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची है । इसके विरोध में दिनांक 26 नवम्बर को हजारों लोगों द्वारा गांधीनगर में प्रतिवाद रैली निकाली गयी थी । इस रैली में कुप्रचारकों के सुनियोजित षड्यंत्र के तहत 'संदेश' के गुंडों ने साधकों जैसे कपड़े पहनकर भीड़ में घुसकर पथराव किया, जिसके प्रत्युत्तर में क्रुद्ध पुलिस ने साधकों-भक्तों एवं आम जनता पर, जिनमें अनेकों महिलाएँ भी थीं, न सिर्फ बुरी तरह लाठियाँ बरसायीं बल्कि आँसू गैस के 60 गोले और 8 हैंडग्रेनेड छोड़े, जैसे ये लोग आम जनता नहीं कोई खूँखार, देशद्रोही आतंकवादी हों । इसमें सैकड़ों लोग बुरी तरह से घायल हुए । बहुत-से लोगों के हाथ-पैर में फ्रैक्चर भी हो गये । उनमें से 234 साधकों-भक्तों को पुलिस ने लाठियों से पीटकर घसीटते हुए अपनी गाड़ियों में डालकर थाने में बंद कर दिया । पुलिस लाठीचार्ज में घायल जो लोग अस्पताल में भर्ती हुए थे, उन्हें भी मरहम-पट्टी होने के बाद सीधा अस्पताल से उठाकर जेल में डाल दिया गया ।

'संदेश' के लोगों द्वारा बापूजी व उनके साधकों को बदनाम करने के लिए अत्यंत सुनियोजित ढंग से यह सारा षड्यंत्र रचा गया था व 'संदेश' के विरुद्ध हो रहे जन-आंदोलन का रुख मोड़ने के लिए उन्होंने ही पुलिस को साधकों के खिलाफ भिड़ाना चाहा था, जबकि साधकों-भक्तों ने तो 4 कि.मी. लम्बी यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से पूरी की थी किंतु पुलिस ने इस ओर जरा भी गौर किये बिना जिस बर्बर ढंग से लाठीचार्ज किया वह अत्यंत शर्मनाक व निंदनीय है । पुलिस के द्वारा पकड़े गये सभी लोगों को अगले दिन धारा 143, 147, 148, 149, 332, 333, 337, 338, 120 (B), 186, बी.पी. एक्ट कलम 135 आदि तथा हत्या से संबंधित धारा 307 के अंतर्गत कोर्ट में पेश कर जेल भिजवा दिया गया ।

हिन्दू धर्म, संस्कृति में आस्था रखनेवाले इन सीधे-सादे आम लोगों को इतना कठोर दण्ड दे देने पर भी गुजरात पुलिस को संतोष नहीं हुआ । 27 नवम्बर को पुलिस की लगभग 25 गाड़ियों, 200 पुलिसकर्मियों तथा बहुत-से मीडियाकर्मियों के साथ पुलिस ने आश्रम पर अचानक धावा बोल दिया । आश्रम में जो भी, जहाँ भी, जिस स्थिति में भी मिला- लातों, जूतों, लाठियों और बंदूक के कुंदों से बुरी तरह पीटते हुए दौड़ा-दौड़ाकर पुलिस की गाड़ियों में ठूँस दिया गया । आश्रम के मुख्य श्रद्धाकेन्द्र मोक्ष कुटीर, सिद्ध वटवृक्ष, मौन साधना गृह, साधक व संत निवास के कमरे, सत्साहित्य केन्द्र, आरोग्य केन्द्र (दवाखाना), टेलिफोन

ऑफिस, ऋषि प्रसाद आदि में पुलिसवालों ने स्वयं लाठियों व बंदूकों के मुट्ठों से बुरी तरह तोड़-फोड़ की एवं अंदर का सामान तहस-नहस कर दिया । शो-केस व खिड़कियों के शीशे अकारण तोड़ डाले गये । बाहर से आये कितने ही जप-अनुष्ठान कर रहे वृद्ध साधकों तथा माताओं-बहनों एवं कुछ नाबालिग बच्चों को भी पीटते हुए पुलिस की गाड़ियों में भर दिया गया । यहाँ तक कि मौन मंदिर में एक सप्ताह की मौन साधना कर रहे एक साधक को दरवाजा तोड़कर बालों से पकड़कर घसीटते हुए तथा अनेक पुलिसकर्मियों द्वारा डंडे बरसाते हुए ले जाया गया । भक्तों तथा पीले कपड़े पहने साधुओं को पुलिस ने विशेष रूप से ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा । भजन कर रहे साधकों-साधुओं को और भी बुरी तरह से पीटा गया । चार-चार, छः-छः पुलिसवालों ने मिलकर एक-एक को मारा, क्या यही गुजरात पुलिस की इंसानियत है ? इस समस्त घटनाक्रम का साक्षी पुलिस के साथ आया हुआ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया स्वयं है, जिन्होंने पुलिस के इस बर्बर कृत्य का प्रसारण अपने चैनलों पर किया ।

सत्साहित्य विभाग, ऋषि प्रसाद, लोक कल्याण सेतु, कैसेट विभाग आदि के काउंटरों पर जो कुछ रुपये-पैसे थे, वे भी पुलिस ने लूट लिये । साधकों को आतंकित करने के लिए पुलिस ने नदी किनारे फायरिंग भी की ।

आश्रम से ले जाने के बाद गाड़ियों से उतरने के स्थान से लगभग 50 मीटर दूर बंदी साधकों को मैदान में बैठाया जाना था । उस पूरे रास्ते के दोनों तरफ लट्ठधारी पुलिस के बीसों जवान जमकर साधकों पर लाठियाँ बरसा रहे थे । सबसे ज्यादा शर्म की बात तो यह है कि गांधीनगर पुलिस इन 200 से भी ज्यादा साधकों को 26 घंटे तक बिना किसी एफ.आई.आर., बिना किसी केस के बंदी बनाकर उनकी मार-पिटाई करती रही और भयंकर मानसिक प्रताड़ना देती रही । सारी रात गांधीनगर पुलिस भक्तों-आश्रमवासियों को शराब पीकर पीटती रही, उन्हें मांस खाने व मदिरा पीने के लिए मजबूर करने का प्रयास करती रही । संत श्री आसारामजी बापू के फोटो पर इन साधकों-भक्तों को थूकने, जूते मारने के लिए तथा बापूजी के लिए गंदी गालियाँ बोलने के लिए मजबूर करने के भी प्रयास किये गये । भक्तों-साधकों के ऐसा करने से मना करने पर उन्हें और भी पीटा गया । 27 नवम्बर को शाम के 4 बजे जिन्हें बंदी बनाया गया था, उनमें से 192 व्यक्तियों को 28 नवम्बर को शाम 6 बजे घायल अवस्था में आश्रम लाकर छोड़ा गया । उनमें से कितने ही लोगों के हाथ-पैर-सिर फूट गये थे, जिन्हें सिविल व प्राइवेट अस्पतालों में तुरंत दाखिल कराना पड़ा ।

मानवता को दहला देनेवाले इस दृश्य के सूत्रधार 'संदेश' अखबारवाले थे, जिन्होंने धर्मांतरणवालों के विदेशी पैसों के बल से डेढ़ वर्ष से पाप के बाप- लोभ के प्रभाव में आकर उनका हत्था बनकर बापूजी के विरुद्ध क्या-क्या आरोप नहीं लगाये, क्या-क्या साजिशें नहीं करवायीं ! सभी कुप्रचारों, षड्यंत्रों में इनके सीधे जुड़े होने की खबर 'साजिश का पर्दाफाश' सी.डी. द्वारा जगजाहिर हो जाने से 'संदेश' वालों ने कुटिलतापूर्ण चाल द्वारा रैली में अशांति फैलाकर पुलिस को आश्रम के साथ उलझा दिया और अपने पूरे आर्थिक, राजनैतिक प्रभाव का इस्तेमाल कर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए इस पूरी घटना को इस तरह अंजाम दिया ।

पुलिस का यह घिनौना आचरण मानवता व लोकतंत्र के नाम पर कलंक है । इसकी जितनी भर्त्सना की जाय कम है । आज तक कितनी ही धार्मिक एवं राजनैतिक रैलियाँ निकली होंगी, कलेक्टर को ज्ञापन दिये गये होंगे परंतु इतनी बर्बरतापूर्वक कभी भी पुलिस ने लाठीचार्ज, इतने आँसू गैस तथा हैन्डग्रेनेड का इस्तेमाल नहीं किया होगा ।

पूज्य बापूजी के खिलाफ चलाये जा रहे षड्यंत्रों

की पराकाष्ठा अब यहाँ तक पहुँची है कि अपराधी मनोवृत्तिवाले, चरित्रहीन राजू चांडक के मात्र कह देने भर से, बिना किसी सबूत एवं गवाह के, उस पर किये गये हमले का दोषी बापूजी को करार देते हुए उसी दिन एफ.आई.आर. दर्ज कर दी गयी। जबकि पुलिस द्वारा 27 नवम्बर को अहमदाबाद आश्रम के साधकों की बेरहमी से की गयी पिटाई व आश्रम में की गयी तोड़फोड़ के बारे में बार-बार निवेदन करने के बावजूद भी अभी तक कोई भी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गयी।

पूज्य बापूजी से भयंकर द्वेष रखनेवाले राजू चांडक द्वारा इस मामले में बापूजी तथा उनके दो साधकों पर संदेह करना एकदम झूठा, आधारहीन तथा पूर्वाग्रह से ग्रस्त आरोप है। वस्तुतः 'साजिश का पर्दाफाश' सी.डी. द्वारा अपने सारे झूठे आरोपों की पोल खुल जाने से बौखलाया हुआ राजू प्रतिशोधात्मक कार्यवाही के रूप में अपने ऊपर हुए गोलीकांड का दोष यदि बापूजी पर लगाता है तो इसकी सत्यता में कितना दम हो सकता है यह बात पुलिस अच्छी तरह समझ सकती है। ऐसे में केवल राजू चांडक जैसे अपराधी के कह देने मात्र से बापूजी जैसे विश्ववंदनीय संत पर पुलिस द्वारा हत्या के षड्यंत्र जैसा संगीन आरोप लगाना कितना हास्यास्पद एवं आधारहीन है यह सभी लोग समझ सकते हैं। इस प्रकरण में एक प्रतिशत का हजारवाँ हिस्सा भी साधकों का हाथ नहीं हो सकता। यह नाटक भी हो सकता है और सच्चाई भी; और सचमुच में गोली लगी हो तो वह इन्हींकी टोली के लोगों की घिनौनी साजिश है। हो सकता है राजू लम्बू के स्टिंग ऑपरेशन के दौरान जिन लोगों के नाम उजागर हुए, उन लोगों ने यह करवाया हो।

सभी साधक ईश्वरस्वरूप 'ॐ' का ध्यान करें और शुभ संकल्प करें कि इन सारे अत्याचारों से निर्दोषों की और संस्था की रक्षा हो तथा दोषियों को...

– एस. एन. भारती ❑

क्या नरेन्द्र मोदी 'सेक्युलर' बनना चाहते हैं ?

– पी. दैवमुत्तु,
सम्पादक, राष्ट्रीय पत्रिका 'हिन्दू वॉइस'

दिनांक २७ नवम्बर २००९ को बहुत-से टीवी चैनलों पर प्रसारित हुए समाचारों को देखकर मैं हैरान हो गया। गुजरात पुलिस आसारामजी बापू के आश्रम में घुसकर वहाँ के लोगों को निर्दयतापूर्वक मार रही थी। बापूजी के साबरमती आश्रम में रहनेवाले साधकों को ऐसे मार रही थी जैसे वे कोई कुख्यात अपराधी हों।

समाचार संवाददाताओं का कहना है कि पुलिस ने आसारामजी बापू के आश्रम में घुसकर लगभग १५० साधकों को गांधीनगर में हुई घटना के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। गांधीनगर डी.एस.पी. पीयूष पटेल ने पी.टी.आई. को बताया कि ''हमने आश्रम से लगभग १५० लोगों को सर्च ऑपरेशन के समय गिरफ्तार किया है।'' उन्होंने यह भी कहा कि आश्रम में संदेहास्पद वस्तु या कोई भी हथियार नहीं मिला।

अपने व्यवसाय के संबंध में आश्रम के बहुत से साधकों से मैं मिल चुका हूँ। उनसे बातचीत और व्यवहार के फलस्वरूप मैं ऐसा कह सकता हूँ कि किसी आदमी को मारना तो दूर वे एक मक्खी भी नहीं मार सकते। ऐसे साधुओं को घोर अपराधियों की तरह मारना-पीटना यह गुजरात पुलिस का कार्य निंदनीय है। आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा निंदनीय कार्य उस प्रदेश में हुआ जहाँ हिन्दुत्व के पक्षधर श्री नरेन्द्र मोदी का शासन है और जिन पर हमें गर्व था। कुछ समय पहले उनकी सरकार

द्वारा अहमदाबाद और सूरत के बहुत से मंदिरों को ढहा दिया गया। ऐसा हिन्दूविरोधी कार्य करके श्री मोदी क्या प्रमाणित करना चाहते हैं ? वे सभी काँग्रेसियों, कम्युनिस्टों, सपा व बसपा की तरह अपने को सेक्युलर साबित करना चाहते हैं ? यदि श्री मोदी ऐसा सोच रहे हैं तो वे अपनी कब्र खोद रहे हैं, अपने कट्टर हिन्दू समर्थक मतदाताओं को अपने से दूर कर रहे हैं।

यदि कोई गैरकानूनी कार्य करता है तो कानून उस पर कार्यवाही कर उसे दंडित कर सकता है, परंतु किसी आश्रम में घुसकर साधकों को निर्दयतापूर्वक पीटना एक जंगली और अप्रजातांत्रिक कृत्य है।

पुलिस के द्वारा किसी मसजिद में घुसकर किसी अपराधी को पकड़ने और मारने की घटना मैंने न तो सुनी है, न तो देखी है। किसी मसजिद या चर्च में घुसकर लाठीचार्ज करने की बात तो दूर है, केरल स्थित मराड़ में सन् २००३ में शुक्रवार की नमाज अदा कर मसजिद से लौट रहे मुसलमानों ने जब बहुत-से हिन्दू मछुआरों की निर्मम हत्या कर दी तो भी पुलिस ने हत्यारों के साथ इस तरह का वर्तन नहीं किया था, न तो वे मसजिद में घुसे थे। मैंने यह भी नहीं सुना है कि गुजरात पुलिस ने किसी मसजिद पर छापा मारकर वहाँ छिपे राष्ट्रद्रोही लोगों को कभी पकड़ा हो।

मैं आसारामजी बापू का अनुयायी नहीं हूँ। मैं किसी संत की वकालत नहीं करता। परंतु एक कट्टर हिन्दू होने के नाते मैं गुजरात पुलिस की इस सशस्त्र हिन्दूविरोधी कार्यवाही का विरोध करता हूँ। यदि कोई गैरकानूनी कार्य करता है तो कानून उस पर कार्यवाही कर उसे दंडित कर सकता है, परंतु किसी आश्रम में घुसकर साधकों को निर्दयतापूर्वक पीटना एक जंगली और अप्रजातांत्रिक कृत्य है। क्या गुजरात पुलिस के पास मसजिद या चर्च में घुसकर इस तरह से बर्बरतापूर्वक किसीको मारने की हिम्मत है ?

मेरे साथ-साथ अन्य हिन्दू भी श्री मोदी को हिन्दुत्व का रक्षक समझते हैं। क्या वे इस घटना के बारे में स्पष्टीकरण देंगे ? वे यह भी बतायें कि वे मसजिद या चर्च में छिपे राष्ट्रद्रोहियों के प्रति भी इसी तरह की कार्यवाही करेंगे ?

सभी हिन्दू साधु-संतों के लिए यह एक चेतावनी है। यदि वे संगठित नहीं होते हैं तो वे भी इस प्रकार की पुलिस बर्बरता के शिकार होंगे।

* मन में यदि भय न हो तो बाहर चाहे कैसी भी भय की सामग्री उपस्थित हो जाय, आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। मन में यदि भय होगा तो तुरंत बाहर भी भयजनक परिस्थितियाँ न होते हुए भी उपस्थित हो जायेंगी। वृक्ष के तने में भूत दिखने लगेगा।
* किसी भी परिस्थिति में दिखती हुई कठोरता व भयानकता से भयभीत नहीं होना चाहिए। कष्टों के काले बादलों के पीछे पूर्ण प्रकाशमय एकरस परम सत्ता सूर्य की तरह सदा विद्यमान है।
* भय, चिंता, बेचैनी से ऊपर उठो। आपको ज्ञान का अनुभव होगा।
* सदैव सम और प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। **('जीवन रसायन' पुस्तक से)**

षड्यंत्र का पर्दाफाश

'रात हुई तो तांत्रिक (अघोरी) ने मेरे को बोला कि माता को भोग लगाने के लिए दारू चाहिए । पाँच दिन तक उसे दारू की बोतल दी और पूरा दिन सुबह से शाम तक बैठा रहा उसके पास । उसने (वासनापूर्ति के लिए) लड़की की माँग की । छठे दिन उसे 'संदेश' (अखबार) में ले जाकर सौंपा । सातवें दिन उसे दिल्ली लाया, मीडिया में दिया । आठवें दिन उसे इंडिया टीवी को सौंप दिया । आठ दिन मैंने उसे कंटिन्युअस झेला है ।' - यह कहना है राजू चांडक उर्फ राजू लम्बू का, जो रचता आया है विश्वप्रसिद्ध संत श्री आसारामजी बापू के खिलाफ षड्यंत्र । पढ़िये एक सनसनीखेज खुलासा...

हिन्दू धर्म व भारतीय संस्कृति को तोड़ने तथा उसे बदनाम करने के षड्यंत्र सदियों से रचे जाते रहे हैं । इसी कड़ी में वर्तमान में भारतीय संस्कृति के महान प्रचारक, गुजरात का गौरव बढ़ानेवाले तथा जन-जन में भक्ति, योग व ज्ञान की भावधारा प्रवाहित करनेवाले लोकसंत श्री आसारामजी बापू के विरुद्ध भी षड्यंत्र किये जा रहे हैं । उन्हें बदनाम करने की कुचेष्टा लम्बे समय से की जा रही है ।

करीब डेढ़ वर्ष से संत श्री आसारामजी बापू व उनके आश्रम के विरुद्ध लगातार हो रहे कुप्रचार का भांडा आखिर फूट ही गया और इन सारे षड्यंत्रों की योजनाएँ बनानेवाला विधर्मियों का चमचा राजू लम्बू बेनकाब हो गया ।

बापूजी पर लगाये पिछले तमाम आरोपों का कोई विशेष असर न होता देखकर राजू बौखला गया था और उसे एक नयी कहानी गढ़ने के लिए एक लड़की की तलाश थी । पूज्य बापूजी पर लगाये गये अनर्गल आरोपों से व्यथित विजय (नाम बदला हुआ) ने उसकी इस कमजोरी का लाभ उठाया और सीमा (डमी युवती) को उससे मिलाकर उसकी सारी करतूत उजागर कर दी । खुफिया कैमरे के सामने राजू ने जो बयान दिये हैं वे बेहद चौंकानेवाले हैं और इससे यह बात साफ तौर पर सामने आ जाती है कि किस तरह के घिनौने षड्यंत्र रचकर राजू व उसके गैंग के द्वारा संत श्री आसारामजी बापू की छवि को धूमिल करने के प्रयास किये जा रहे थे । इस कुकृत्य में लिप्त अनेक लोगों के नाम भी सामने आये हैं, जिसमें गुजरात का 'संदेश' नाम का बिकाऊ अखबार खासतौर से शामिल है । इस स्टिंग ऑपरेशन में उजागर हुईं बातें बड़ी रोचक हैं, जो कि इन षड्यंत्रकारियों की पोल खोलकर रख देती हैं । स्टिंग ऑपरेशन की यह रिपोर्ट जब 'A2Z' चैनल पर प्रसारित हुई तो इस खबर ने तहलका मचा दिया ।

स्टिंग ऑपरेशन में राजू कहता है कि **'बापू को फँसाना बेहद आसान काम है । यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं है पर करने के पहले सौ बार सोचके काम करना है ।'**

अपनी बात को अच्छी तरह समझाते हुए राजू लम्बू ने कहा : **'मुझे जो भी काम करना है सोलिड करना है । करेगा तो एकदम धड़ाक से**

करेगा, कुछ भी पता नहीं चलेगा। काम चाहे नहीं हो लेकिन करने के पहले सौ बार सोचकर काम करूँगा। दूसरा, एडवोकेट अपनी स्टोरी को इनको (सीमा को) समझायेगा। कुछ चीजें ऐसी हैं जो इसमें नहीं हैं, वो इनसे (सीमा से) पूछकर इस (स्टोरी) में एड करेगा। एडवोकेट जो चीज बतायेगा उससे उसके (बापू के) ऊपर धाराएँ लगेंगी। वो स्टोरी ठीक से तैयार करेगा।'

अघोरी तांत्रिक वाले प्रकरण का जिक्र करते हुए लम्बू ने कहा : **'और वो तांत्रिक बाबे को, जिसने इनके (बापू के) अगेंस्ट केस किया था, उसको लेकर हम गये थे 'संदेश' वाले के पास। तो 'संदेश' वाले ने मेरा नाम डाल दिया एफ.आई.आर. में।'**

इस स्वीकारोक्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि अघोरीकांड भी राजू लम्बू व 'संदेश' वाले के दिमाग की उपज थी।

राजू ने पाँच दिन तक अघोरी तांत्रिक के लिए दारू का इंतजाम किया। यहाँ यह बता देना प्रासंगिक होगा कि गुजरात में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध है, ऐसे में इसने लगातार पाँच दिन तक उसे शराब दी। यह एक दण्डनीय अपराध है। गाँधीजी के गुजरात में एक ऐयाश आदमी खुलेआम शराब का लेन-देन करता है और उसे स्वीकार भी करता है, फिर भी प्रशासन चुप है!

स्टिंग ऑपरेशन में राजू ने यह भी बताया कि **अघोरी को इस काम के लिए उसने किसी पार्टी से 30-40 हजार रुपये दिलाये थे!**

अमृत प्रजापति भी इस ग्रुप का था; उसका जिक्र करते हुए राजू कहता है : **'अमृत भाई उतावलेपन में काम करता है। मैं उतावलेपन में काम नहीं करता, बहुत सोच-समझकर चार कदम फूँक-फूँककर रखता हूँ।'**

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि पिछले वर्ष एक बुरकेवाली लड़की ने बापूजी पर मनगढ़ंत चारित्रिक आरोप लगाये थे। आपको जिज्ञासा होगी कि वह बुरकेवाली कौन थी? वह थी अमृत प्रजापति की पत्नी। अमृत ने रांदेर (सूरत) पुलिस थाने में स्वीकार किया कि **'बापू को बदनाम करने के लिए मैंने अपनी पत्नी को ही बुरका पहनाकर खड़ा किया था।'** पर इस बांत को कहीं किसीने प्रकाशित नहीं किया।

अपनी गहरी पैठ बताते हुए राजू आगे कहता है : **'चार लोग मेरे वाले हैं- दो जूडिशियरी (न्यायपालिका) में हैं, दो इस लाइन के महामहिम हैं - उनसे सलाह लेकर काम करता हूँ।'**

आखिर वे लोग कौन हैं? उनके नाम राजू ने नहीं बताये। विजय और सीमा को पूर्ण आश्वस्त करते हुए राजू लम्बू ने कहा : **'दिनेश भाई (भागचंदानी) मेरे साथ हैं, शेखर भाई भी मेरे साथ है, कौशिक भाई (पटेल) भी मेरे साथ हैं, सब पूरी टीम ही मेरे साथ है। आज आसाराम के ऊपर 'संदेश' ने टाइट करके रखा है मामला। उसका 'डाइरेक्ट इन्वोल्वमेंट' है। इसके (डमी युवती सीमा के) केस में तो मेरे को पूरा 'सपोर्ट' करेगा। वो पूरी 'डिटेल स्टोरी' इस केस में मुझे देगा, एफिडेविट, एफ.आई.आर. भी देगा, सब कुछ वो देगा। उसके पीछे बचने का 'रास्ता' भी बनाकर देगा।'** षड्यंत्र में स्टंटरूप किसी दूसरी लड़की की बात चलने पर लम्बू ने कहा : **'वो लड़की गुजरात की थी, उसने मना कर दिया।'**

विजय को लम्बू 'संदेश' के ऑफिस में भी ले गया था। विजय को लड़की का स्टंट खड़ा करने के लिए ढाई लाख लम्बू और ढाई लाख 'संदेश' देनेवाला था। 'संदेश' के एक मैनेजर लेवल के व्यक्ति पटेल ने बातचीत में विजय से कहा कि **'अब हम पैसा लगाने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे। अघोरी भी भाग गया, उसने कुछ खास नहीं बोला। इससे हमारा सर्क्युलेशन (खपत) करीब आधा हो गया है।'**

अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राजेश सोलंकी, देवेन्द्र भँवरसिंह, बारेला (गुजरात) के रमेश पटेल, अविन वर्मा, वीणा चौहान आदि समाजकंटकों के नाम भी बेनकाब हुए हैं । इस स्टिंग ऑपरेशन ने संत श्री आसारामजी बापू पर लगाये गये अनेकों झूठे इल्जामों की पोल खोल दी है और गुजरात की जाग्रत जनता 'संदेश' का बहिष्कार कर रही है ।

'संदेश' अखबारवाला, राजू लम्बू और उसके साथियों के गैंग पर कानूनी कार्यवाही करने की माँग को लेकर संत श्री आसारामजी बापू के साधक अब मैदान में उतर चुके हैं । साधकों ने गांधीवादी मार्ग को अपनाकर दिनांक 12 नवम्बर से ही उपवास-धरना 'संदेश' प्रेस के सामने मौनपूर्वक बैठकर चालू कर दिया । अमदावाद, राजकोट, सूरत, भावनगर, पाटण, मेहसाणा, भरुच, बड़ौदा, गांधीनगर आदि समग्र गुजरात में जगह-जगह विशाल रैलियाँ निकलीं । साधकों के अनशन व धरने पर बैठे 15-15 दिन होने पर भी प्रशासन की ओर से उनके प्रति न तो कोई सहानुभूति दिखायी गयी, न ही षड्यंत्रकारियों के खिलाफ कोई कार्यवाही की गयी । इससे क्या स्पष्ट होता है ?

वास्तव में बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र करनेवालों को खोजकर उन पर कानूनी कार्यवाही करने का काम तो प्रशासन का है । वह काम तो उनसे न हुआ परंतु किसीके द्वारा बेनकाब किये गये षड्यंत्रकारियों पर अब तक कोई भी कार्यवाही क्यों नहीं की गयी ? यह प्रश्न भी अब बहुत सारी शंका-कुशंकाएँ पैदा कर रहा है ।

उल्लेखनीय है कि आश्रम के सात निर्दोष साधकों पर कलम 304 लगायी जाने से षड्यंत्रकारियों का मनोबल बढ़ गया है और प्रशासन में भी उनकी गहरी पहुँच का संदेह व्यक्त हो रहा है । - आर.सी. मिश्र ❑

अखंड आत्मदेव की उपासना

भगवान शंकर श्री वसिष्ठ मुनि से कहते हैं : ''हे ब्राह्मण ! जो उत्तम देवार्चन है और जिसे करने से जीव संसार-सागर से तर जाता है, सो सुनो । हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! पुण्डरीकाक्ष विष्णु देव नहीं और त्रिलोचन शिव भी देव नहीं । कमल से उपजे ब्रह्मा भी देव नहीं और सहस्रनेत्र इन्द्र भी देव नहीं । न देव पवन है, न सूर्य है, न अग्नि है, न चन्द्रमा है, न ब्राह्मण है, न क्षत्रिय है, न तुम हो, न मैं हूँ । अकृत्रिम, अनादि, अनंत, चैतन्यरूप ही देव है । वही 'देव' शब्द का वाचक है और उसीका पूजन वास्तव में पूजन है । जिससे यह सब हुआ है और जो सत्ता शांत, आत्मरूप है, उस देव को सर्वत्र व्याप्त देखना ही उसका पूजन है । जो उस संवित्तत्त्व को नहीं जानते, उनके लिए साकार की अर्चना का विधान है। जैसे जो पुरुष योजनपर्यन्त नहीं चल सकता, उसको एक कोस-दो कोस चलना भी भला है, वैसे ही जो पुरुष अकृत्रिम देव की पूजा नहीं कर सकता, उसका साकार को पूजना भी भला है। जो परिच्छिन्न (खंडित) की उपासना करता है, उसे फल भी परिच्छिन्न प्राप्त होता है और जो अकृत्रिम आनंदस्वरूप अनंत देव की उपासना करता है, उसे वही परमात्मारूपी फल प्राप्त होता है ।

वह देव कैसा है, उसकी पूजा क्या है और कैसे होती है, सो सुनो । बोध, साम्य और शम ये तीन फूल हैं । 'बोध' सम्यक् ज्ञान का नाम है अर्थात् आत्मतत्त्व को ज्यों-का-त्यों जानना । 'साम्य' सबमें पूर्ण देखने को कहते हैं और 'शम' का अर्थ है चित्त को निवृत्त करना तथा आत्मतत्त्व से भिन्न कुछ न देखना । इन्हीं तीनों फूलों से चिन्मात्र शुद्ध देव शिव की पूजा होती है, आकार की अर्चना से अर्चना नहीं होती ।

हे मुनि ! आत्मा भगवान एक देव है । वही शिव और परम कल्याणरूप है। सर्वदा ज्ञान-अर्चना से उनकी पूजा करो, और कोई पूजा नहीं है । ❑

मोहे संत सदा अति प्यारे

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

कांची के मंदिर में एक पुजारी पूजा करता था। पुजारी का काम था भगवान की पूजा-आरती करे, भोग लगाये और भगवान को भोग लगाया हुआ प्रसाद राजासाहब के पास पहुँचाये।

एक बार राजा किसी बात से पुजारी पर नाराज हो गया। राजा ने आदेश दे दिया कि 'पुजारी इस मंदिर में पूजा नहीं करेगा और मेरे राज्य में भी नहीं रहेगा।' अब राजा का आदेश है तो पुजारी बेचारा क्या कर सकता था। तीन दिन के अंदर राज्य से निकलना था। उसने अपना सामान आदि समेट लिया।

पुजारी एक महात्मा के पास आता-जाता था, उनकी सेवा करता था। वह महात्मा के पास जाकर बोला : ''महाराज ! मुझे तो राज्य छोड़ने का आदेश मिला है। अब मैं जा रहा हूँ, आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ।''

महात्मा ने कहा : ''तू रोज भोजन बनाकर दे जाता था, ठाकुरजी का प्रसाद लाता था। तेरे जैसा भक्त जाता है तो फिर हम यहाँ बैठकर क्या करेंगे ? चलो, जहाँ तुम वहाँ हम।''

महात्मा ने भी अपना झोली-झंडा समेटा। बाबा लोगों का क्या है, जहाँ जायेंगे वहाँ खायेंगे ! जय-जय सियाराम ! महात्माजी मंदिर में गये और भगवान नारायण से बोले : ''हे शेषशायी ! आप भले ही यहाँ आराम करो, हम तो अब जाते हैं। पुजारी सेवक जा रहा है तो हम इधर बैठकर क्या करेंगे !''

भगवान ने उनको कहा कि ''जब आप जैसे संत चले जायेंगे तो हम इधर नगर में क्या करेंगे ! मुझे भी इन राजाओं का राजवी भोग नहीं चाहिए। संत होते हैं तो मुझे अच्छा लगता है। चलो, हम भी चलते हैं आपके साथ।''

आगे पुजारी, उसके पीछे महात्मा और उनके पीछे भगवान शेषशायी नारायण साधारण आदमी का रूप बनाकर चल दिये। चल दिये तो नगर में उथल-पुथल होने लगी, राजा को भयंकर सपने आने लगे, नगर में अपशकुन होने लगे। राजा भागता-दौड़ता दूसरे महात्माओं के पास पहुँचा और उनसे उत्पातों का कारण पूछा तो पता चला कि पुजारी गये तो महात्मा गये और महात्मा गये तो भगवान शेषशायी भी चले गये। अब तो मंदिर में केवल मूर्ति है, मूर्ति का देवत्व तो भगवान समेटकर ले गये। जैसे बिजली, पंखे सब होते हैं और फ्यूज उड़ गया तो हाय-हाय ! करते रहो। ए.सी. है, पावर हाउस भी है तो क्या हुआ, फ्यूज उड़ गया तो कुछ नहीं ! ऐसे ही भगवान ने फ्यूज निकाल लिया तो राज्य में हाहाकार मचने लगा।

राजा मंदिर में गया और भगवान शेषशायी के आगे प्रार्थना की। आकाशवाणी हुई : ''राजन् ! जब महात्मा जा रहे हैं तो हम क्यों रहेंगे ?''

राजा ने महात्माजी के पास जाकर कहा : ''महाराज ! आप रुक जाइये।''

महात्मा बोले : ''तुमने इन सज्जन-स्वभाव पुजारी को तो निकाल दिया, अब ये नहीं रहेंगे तो हम क्यों रहें ! पहले इनसे माफी माँगो, इन्हें मनाओ। ये रहेंगे तो हम रहेंगे।''

भगवान बोले : ''महात्मा रहेंगे तो हम भी रहेंगे।''

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कौन पास, कौन दूर ?

भगवान ने मनुष्य को 'प्रीति' करने का जो गुण दिया है, उसका सदुपयोग करके वह महान-से-महान बन सकता है। वह प्रीति अगर नश्वर शरीरों में, परिवार और पैसों में, भोजन, शराब और पेय पदार्थों में की तो अधम हो जायेगा, उसके लिए मृत्यु एवं जन्म-मरण का कारण बनेगी लेकिन वही प्रीति यदि भगवान में हो गयी, महापुरुषों में हो गयी तो उसके लिए मोक्षप्राप्ति का देवदुर्लभ साधन बन जाती है।

परमार्थ के पथिक साधकों के जीवन में यह प्रायः देखा जाता है कि गुरु के संग से, सत्संग से संसार की नश्वरता समझकर संसारी वस्तुओं में उनकी प्रीति कम हो जाती है, समाप्त हो जाती है और वही प्रीति वास्तविक सुख की झलक देनेवाले महापुरुष में हो जाती है। यह प्रीति का गुण ऐसा है कि जिसमें हो जाता है हमेशा उसके पास रहना चाहता है, फिर चाहे वह किसी व्यक्ति में हो, वस्तु में अथवा परिस्थिति में ही क्यों न हो।

यही कारण है कि हर साधक, भक्त अपने गुरुदेव के नजदीक-से-नजदीक रहना चाहता है। लेकिन यहाँ साधकों से थोड़ी भूल हो जाती है कि वे गुरु की व्यापकता को भूलकर उनको एक शरीर में केन्द्रित करके उसी शरीर के साथ रहने को गुरु के समीप रहना मान लेते हैं। इस विषय में महान गुरुभक्त स्वामी मुक्तानंदजी बाबा कहते हैं : ''गुरु के शरीर मात्र को गुरु समझकर उनके नजदीक होने से साधक का कभी अंतर-समाधान हो सकता है, ऐसा मैं नहीं समझता। ऐसी निकटता का बहुत अर्थ नहीं। हमारे नित्यानंद बाबा के पास कुछ पुराने भक्त उनको हमेशा घेरे रहते थे। अंत तक वे घेरे ही रहे। उनको घिराव ही प्राप्त हुआ। घिराव से ज्यादा हमने उनमें कुछ देखा नहीं।

एक लड़का उनके पास रात-दिन रहा करता था; रहना, खाना-पीना, सोना सब वहीं। कभी बाबा उसका नाम लेकर पुकारते : 'क्यों रे, किधर गया ?' तो पता चलता, वह नदी पर मछली पकड़ने गया है। तो ऐसे निकट आने से क्या होता है ?'' वह तो नदी में मछली पकड़ने जाता था, आज के लोग भी जो जरा-जरा-सा सुख लेने के लिए, पेट भरने के लिए पूरा जीवन लगा रहे हैं, वे संसार-सागर में मछली पकड़ने जैसा ही तो कर रहे हैं।

बाबा आगे कहते हैं : ''छान्दोग्य उपनिषद् में उद्दालक ऋषि और श्वेतकेतु की कहानी गुरु की निकटता के विषय में सत्य तत्त्व का निर्देश करती है।''

उद्दालक नाम के एक महान ऋषि और गुरु थे। वे सामवेद के ज्ञाता थे। 'तत्त्वमसि' का निर्देश उन्होंने ही किया। उनका पुत्र एवं शिष्य था श्वेतकेतु। बड़ा चपल, बड़ा बुद्धिशाली और मेधावी। उद्दालक ऋषि ने उससे कहा : ''श्वेतकेतु ! तू ब्रह्मचर्यवास कर क्योंकि सौम्य ! हमारे कुल में उत्पन्न हुआ कोई भी पुरुष अध्ययन न करके ब्रह्मबंधु-सा (नाममात्र का ब्राह्मण) नहीं होता।'' ऐसा कहकर उसे दूसरे गुरु के पास शिक्षण के लिए भेज दिया।

श्वेतकेतु बारह वर्ष की अवस्था में उपनयन कराकर चौबीस वर्ष का होने पर सम्पूर्ण वेदों का

अध्ययन करके अपने पिता महर्षि उद्दालक के पास वापस आ गया । श्वेतकेतु अपने को बहुत ज्ञानी समझकर उद्दालक के साथ साधारण व्यवहार करने लगा । उसे नहीं मालूम था कि उद्दालक ऋषि उससे बहुत बड़े ज्ञानी हैं । वह पिता गुरु को साधारण समझकर उनसे साधारण व्यवहार करता । उद्दालक श्वेतकेतु के अल्प ज्ञान को जानते थे ।

उद्दालक ने उससे कहा : ''सौम्य ! तू जो ऐसा पाण्डित्य का अभिमानी और अविनीत है, सो क्या तूने वह आदेश पूछा है जिसके द्वारा अश्रुत श्रुत हो जाता है, अमत मत हो जाता है और अविज्ञात विशेषरूप से ज्ञात हो जाता है ?'' ऐसे तीन प्रश्न उद्दालक ने किये ।

यह सुनकर श्वेतकेतु को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसका अहंकार गल गया । उसको लगा कि उसने पूरा पढ़ा नहीं । उसने पूछा : ''भगवन् ! वह आदेश कैसा है ?''

उद्दालक ने कहा : ''हे सौम्य ! एक मिट्टी के पिण्ड द्वारा मिट्टी के बने समस्त पदार्थों का ज्ञान हो जाता है । विभिन्न नाम तो वाणी के विकार हैं, सत्य तो केवल मिट्टी ही है । जैसे एक सुवर्ण पिण्ड द्वारा सुवर्ण के पदार्थों का ज्ञान हो जाता है क्योंकि नाम तो वाणी के विकार हैं, सत्य तो एक सुवर्ण ही है । जिस प्रकार एक नख काटनेवाली नहन्नी अर्थात् लोहे के टुकड़े से लोहे के सभी पदार्थों का ज्ञान हो जाता है, नाम तो केवल वाणी के विषय हैं, सत्य तो लोहा ही है; सौम्य ! ऐसा ही वह आदेश भी है ।''

श्वेतकेतु ने कहा : ''निश्चय ही वे मेरे पूज्य गुरुदेव इसे नहीं जानते थे । यदि वे जानते तो मुझसे क्यों न कहते । अब आप ही मुझे वह बतलाइये ।'' श्वेतकेतु के ऐसा कहने पर फिर पिता उद्दालक ने उसे 'तत्त्वमसि' का उपदेश किया ।

मुक्तानंदजी कहते हैं : ''हमेशा केवल गुरु के शरीर के निकट आने का विशेष प्रयोजन भी नहीं, अंतरात्मा के निकट जाने से गुरु के निकट होने जैसा हो जाता है । वह अंतरात्मा ही अंतरगुरु है । श्वेतकेतु तो महान ब्रह्मज्ञानी गुरु ऋषि उद्दालक के पास बचपन से ही रहा लेकिन जब तक उनका ब्रह्मज्ञान का सत्संग सुनकर द्वैत के भ्रम को नहीं मिटा सका, तब तक वह उनसे दूर जैसा ही रहा । लेकिन जब गुरु पिता उद्दालक ऋषि ने 'तत्त्वमसि' का उपदेश किया, ब्रह्मविद्या का दान दिया तब श्वेतकेतु को गुरु की वास्तविक निकटता का एहसास हुआ, पूरा लाभ हुआ । ब्रह्मवेत्ता गुरु के शरीर के पास जाना तो अवश्य चाहिए लेकिन केवल बाहर के शरीर के पास ही जीवन भर आते-जाते रहे, गुरु के इशारे के अनुसार चलकर अंदर से गुरु के पास नहीं पहुँचे तो आपने गुरु से पूरा लाभ नहीं उठाया ।

मैंने पहले कहा कि कुछ लोग मेरे गुरुदेव के हमेशा नजदीक रहते थे, निकट रहते थे। उन्हें वह निकटता ही हाथ में आयी, बाबा हाथ में नहीं आये । गुरु इस कमरे में रहे, तुम बगल के कमरे में रहो, गुरु इस कुर्सी पर बैठे और तुम पास में बैठो तो नजदीक, ऐसा नहीं समझना चाहिए। निकटता हृदय की है, हृदय में आसीन गुरु के पास बैठने की है । जिस आत्मतत्त्व को गुरु बताते हैं, अंदर उसके निकट जाने से गुरु के निकट जाना समझना चाहिए, अपने को गुरु के पास बैठा हुआ समझना चाहिए ।'' आपके जीवन में जितना गुरु-आज्ञापालन का गुण अधिक है, उतना आप गुरु के शरीर से दूर होते हुए भी नजदीक हैं और जितनी गुरु-आज्ञापालन में लापरवाही है, उतना आप गुरु के शरीर के पास होते हुए भी दूर हैं । ❑

कबिरा कुत्ता राम का...

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आज का युग इतना गिरा हुआ युग है कि माता-पिता और गुरुजनों का कहा मानने से उन्नति होती है यह बात समझ में नहीं आती, इतनी मति मारी गयी। जो लफंगे कहते हैं उसीको सहयोग देकर बेचारे युवक-युवतियाँ पथभ्रष्ट हो रहे हैं। जवानी तो खिलता हुआ फूल है, महकता हुआ गुलशन है लेकिन देखो तो बेचारे तनावों से भरे हैं, पीड़ाओं से भरे हैं क्योंकि लफंगों की दोस्ती ने नोचकर कहीं का न रखा।

लफंगे कौन हैं ? वही लफंगे हैं जो हमको भगवान से, भगवद्-रस से, भगवद्-शांति से, भगवद्-ज्ञान से, भगवद्-जनों से दूर करते हैं। काम है, क्रोध है, लोभ है, मोह है, मद है, मात्सर्य है, चाहे मनचले यार हैं, दोस्त हैं जो भी हमको भगवान से दूर करते हैं, श्रद्धा से दूर करते हैं, वे सभी लफंगे हैं। तो हम भगवान को पुकार लगायें, गुहार लगायें कि 'प्रभु ! हमारी रक्षा करो।' ज्ञानेश्वर महाराज जैसे भी गुहार लगाते थे। कबीरजी भी पुकार लगाते थे :

कबिरा कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम।
गले राम की जेवरी[1], जित खैंचे तित जाऊँ।
तो तो करे तो बाहुड़ो, दुर दुर करे तो जाऊँ।

'तो तो' करे तो नजदीक हो जाऊँ और 'दूर दूर' करे तो दूर हो जाऊँ।

ज्यों हरि राखे त्यों रहूँ, जो देवे सो खाऊँ।

हमारी अपनी इच्छा ही हमारे लिए मुसीबत हो जाती है। मनचाहा हुआ तो १०,००० जन्मों में भी मुक्ति नहीं होगी। अपने मन की करी तो भटकानेवाला मन जीवित रहेगा। लोफरों की चाही करोगे, लफंगों की चाही करोगे तो माता-पिता से दूर हो जाओगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य - ये सारे लफंगे हैं। इनको सहयोग देने की करेंगे तो आत्मा-परमात्मारूपी माता-पिता से दूर चले जायेंगे।

कबीरजी कहते हैं : **कबिरा कुत्ता राम का...** क्या निरहंकारिता है ! क्या देहाध्यास से उपरामता है !! कोई कुत्ता कह देता है तो लोग भड़कते हैं और ये महापुरुष अपने को कह रहे हैं :

कबिरा कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम।

नाम भी खोज लिया। अहाहा... !

कलजुग केवल नाम आधारा।

रट लगा दो, पुकारो - ॐ... ॐ... हमारे मन को तू जेवड़ी (रस्सी) बाँध ले मेरे नारायण, मेरे राम ! कुत्ता ऐसा थोड़े ही बोलता है कि मेरे लिए ये पकवान बना दो। जो मालिक ने दिया वाह-वाह ! ऐसे ही तू जो दे, वाह-वाह ! तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से भी प्यार। चाहे सुख दे, चाहे दुःख दे, मान दे, अपमान दे... तेरा दिया हुआ दिखे, ऐसा नजरिया दे दे न ! हे माधव ! सद्बुद्धि दे। हम अपने मन के चंगुल से बाहर आयें, ऐसी कृपा कर प्रभु ! इस मन ने तो हमें कई युगों तक भटकाया, अभी भी यह अपनी मनमानी कराने को घसीटकर ले जा रहा है। महाराज ! दया करो। कुछ सूझता नहीं है। हे गोविंदा ! हे गोपाला ! हे अच्युता ! हे हरि ! हे माधव ! तू रक्षा कर देव... सद्बुद्धिदाता !

केवल ४० दिन सच्चे हृदय से, कातर भाव

१. रस्सी

से कहो कि 'मैं तेरे द्वार का कुत्ता हूँ। तेरे द्वार का बालक हूँ। भटका हुआ अनजान बच्चा हूँ। तू मुझे सद्बुद्धि दे।' इतना आप कह सकते हो और वह दाता सद्बुद्धि देगा तो इन लफंगों की दाल नहीं गलेगी। जब असत् संग होता है, असत् साधन होता है तो सत्संगी होते हुए भी हमारा पतन हो जाता है और जब सत् साधन होता है तो फिर पतन से हम बाहर आ जाते हैं। आप ऐसा मत समझना कि वह दूर है। सत्य पर, परमात्मा पर कोई आवरण आ गये हैं और हम मिटायेंगे, हटायेंगे तब वह मिलेगा। अरे, उस सत्यस्वरूप की सत्ता से ही आप यहाँ देख रहे हो, सुन रहे हो, मन संकल्प-विकल्प कर रहा है, बुद्धि निर्णय कर रही है। वह इतना नजदीक है, सर्वसमर्थ है, हितैषी है। उसकी कृपा में कहीं कमी नहीं लेकिन हम देखने, सूँघने, सुनने, चखने और स्पर्श करने के इन लफंगे विकारों में सत्बुद्धि कर बैठे हैं और उस सत् से विमुख जैसे दिख रहे हैं फिर भी विमुख नहीं हो सकते। विकारों के सम्मुख होते हुए हम दिख रहे हैं, फिर भी विकारों के सम्मुख हम टिक नहीं सकते। कितना भी कामी व्यक्ति हो काम में टिक नहीं सकता; व्यक्ति क्रोध में टिक नहीं सकता, लोभ में टिक नहीं सकता, मोह में टिक नहीं सकता, चिंता में टिक नहीं सकता, अहंकार में टिक नहीं सकता और चैतन्यस्वरूप के साथ का उसका संबंध मिट नहीं सकता। ओ हो ! क्या स्पष्ट सत्य है !! नारायण... नारायण... नारायण... नारायण...

कबिरा कुत्ता राम का... जो देवे सो खाऊँ।

आप ऐसे बन जाओ न ! तेरी मर्जी पूरण हो ! दुःख दिया है, तुमने भेजा है, वाह महाराज ! आप ही का प्रसाद है। विघ्न-बाधा आये तो विचार आये कि 'आपने मजबूत होने के लिए भेजी है वाह-वाह !' सफलता और यश आये तो सोचें कि 'हमें उत्साहित करने के लिए भेजे हैं, वाह-वाह महाराज ! दाता क्या-क्या प्रक्रियाएँ हैं विकसित करने की !'

कबिरा कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम।
गले राम की जेवरी, जित खैंचे तित जाऊँ।

जो तेरी आज्ञा। हमने गुरुजी के चरणों में अपने मन को कुत्ता बना दिया था : 'जो गुरु की आज्ञा।' ऐसी साखी तो हम नहीं बना पाये थे लेकिन अपने को ऐसा ढालने में गुरु की कृपा का साथ रहा। मैंने अपनी मनचाही कभी नहीं करी। मनचाही करते रहेंगे तो हमारी मनचाही समझो हो भी गयी तो बंधन बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं; वासना बढ़ेगी, अहंता बढ़ेगी, ममता बढ़ेगी। नानकजी ने भी कहा :

तेरा भाणा मीठा लागे।
जो तुधु भावै साई भली कार।

जो तुझे भाता है वह अच्छा है। हम दुःखी कब होते हैं ? जब अपनी मनचाही करने में लगते हैं। मनचाही होती है तो अहंकारी और भोगी बनते हैं और मनचाही नहीं होती तो फरियादी और दुःखी बनते हैं। दोनों तरफ दुःख-ही-दुःख है, घाटा-ही-घाटा है ! भगवान में प्रीति हुए बिना..

बिनु रघुवीर पद जिय की जरनी न जाई।

भगवान में प्रीति किये बिना ये विकार, वासनाएँ, अहंकार - ये चित्त की लफंगी वृत्तियाँ शांत नहीं बैठतीं। भगवान में प्रीति करो तो इनकी दाल नहीं गलती।

कबीरजी बोलते हैं : **कबिरा कुत्ता राम का...** जहाँ भगवान ले जाय, जिस समय जो दे दे, 'वाह-वाह !' करके उसमें प्रीति और विश्रांति का सुख बनायें।

हम अहं के कुत्ते हो जाते हैं। जहाँ अहं ले जाय वहाँ भागते हैं और कबीरजी अंतर्यामी

परमात्मा के हो जाते हैं और वे अपने लिए बोलते हैं 'कुत्ता' !... आप ईश्वर को अपना मानकर ईश्वर के भरोसे अपनी डोर तो लगा दो, फिर देख लो मजा ! 'महाराज ! हमको तो आपको पाना है, हम नहीं जानते कैसे पायें । अब हम आपके हैं । ॐ... ॐ... ॐ...' ॐकार का उच्चारण करते हुए 'ॐ कृष्ण', 'ॐ अच्युत', 'ॐ गुरु', 'ॐ गोविंद'... रात को सोते समय ऐसा करते-करते ॐस्वरूप भगवान का थोड़ा चिंतन करके सो जाओ । आज से पक्का कर लो- रोज रात को भगवान से बात करके फिर सोयेंगे । पक्का, वचन पक्का... कसम खा लो, सिर पर हाथ रखो । फिर सुबह थोड़ी देर- **'मेरी हो सो जल जाय, तेरी हो सो रह जाय ।** मेरी हैं इच्छाएँ, वासनाएँ, कामनाएँ, बेवकूफी और तेरी है मिलने की मधुरता; तेरी कृपा रह जाय मेरी इच्छा जल जाय ।' इतना कहने में कोई जोर पड़ेगा क्या ? डर लगेगा क्या ? आपकी हैं तो क्या है और आज तक पूरी हुईं तो उन निगुरियों ने क्या दे डाला ? इतनी सारी इच्छाएँ, वासनाएँ आयीं और उनके अनुसार आप नाचे, उन्होंने क्या दे दिया आपको ? समय, शक्ति, सूझबूझ, बल-बुद्धि, तेज, तंदुरुस्ती, आयुष्य नष्ट किया और क्या दिया ? तो बोल दो कि **'मेरी हो सो जल जाय...** मेरी जो इच्छाएँ हों, वासनाएँ हों वे जल जायें और तेरी जो इच्छा हो वह रह जाय' और दूसरी बात, ऐसा करने के बाद समझो मुसीबत आ गयी तो सोचो, 'वाह-वाह ! तूने मुसीबत भेजी है, वाह-रे-वाह !! आ सहेली ! आ देवी ! तू ठाकुरजी की भेजी हुई है, प्रभु की भेजी हुई है ।' वह मुसीबत तुम्हारी हितैषी, सहेली हो जायेगी । मान आया वाह-वाह... अपमान आया वाह-वाह... निंदा आयी वाह-वाह... स्तुति आयी वाह-वाह... ये सारे दिखेंगे तो विष के गोले लेकिन अंदर अमृत के तोहफे बन जायेंगे ।

अपनी मनचाही में जो लगता है, एक जन्म नहीं एक करोड़ जन्म ले ले और बड़े गुरु भी मिल जायें तो भी मुक्ति नहीं मिलेगी ।

मेरी हो सो जल जाय, तेरी हो सो रह जाय ।

इससे हमको बड़ा फायदा हुआ । बाल बढ़ जाते तो हम गुरुजी को चिट्ठी लिखते कि 'दाढ़ी-बाल बढ़ गये हैं, मुंडन करूँ या छँटाई करूँ, जो आज्ञा... ।' गुरुजी कभी कहीं, कभी कहीं... खत घूमता-फिरता जाता और फिर गुरुजी के इर्द-गिर्द कृपानाथ लोग रहते थे कि 'आशारामजी का खत काहे को देना जल्दी से !' तो कभी खत पहुँचे, कभी न पहुँचे, फिर भी कभी-कभी पहुँचके, घूम-फिरकर उत्तर आता कि छँटाई करा दो तो हम छँटाई कराते, मुंडन कराते । हमने मान रखा था कि हम समर्पित हैं तो ये दाढ़ी-बाल हमारे बाप की चीज नहीं हैं, गुरुजी की चीज हैं । गुरुजी की आज्ञा जब तक नहीं आती थी तब तक हम छँटाई नहीं कराते थे । बस, गुरुजी जो कहेंगे वही... तो मन के चंगुल से बचने में मुझे तो बहुत फायदा हुआ, फटाक-से फायदा हुआ ।

आप लोग अपने मन की करवाने के लिए बापू के पास आते हैं - 'यह कर दो, ऐसा कर दो, ऐसा ध्यान लग जाय... ।' ईमानदारी से बोलो । मन की होती रही तो १०,००० जन्म बीत जायें पिया नहीं मिलेगा, और सब मिल-मिलके मिट जायेंगे अपन कंगले रह जायेंगे ! अपने मन की हो तब भी वाह-वाह और नहीं हुई तो दुगनी वाह-वाह कि तेरे मन की हुई वाह... ! और यह भी बिल्कुल वैज्ञानिक बात है कि सब अपने मन की होती नहीं, जितनी होती है वह सब भाती नहीं और जो भाती है वह टिकती नहीं, इसमें संशय है क्या ? तो फिर काहे को कंगले बनो, चलो कर दो आहुति.. जाने दो, जब टिकनेवाली नहीं हैं तो अभी से भगवान के गले पड़ो : 'महाराज ! तेरी

हो।' यह बहुत सुंदर तरीका है बहुत ऊँची चीज पाने का !

सत्संग से जो भला होता है उसका वर्णन नहीं हो सकता। सत्संगकर्ता का जितना उपकार मानो, उतना कम है। **जो सत्संग देनेवाले संत का उपकार नहीं मानते या उनमें दोषदर्शन करते हैं, उनको बड़ा भारी पाप लगता है। उनकी बुद्धि मारी जाती है, कुंठित हो जाती है, विकृत हो जाती है। रब रूसे तो मत खसे। परमात्मा रूठता है तो मति मारी जाती है। फिर कल्याणकर्ता में भी दोषदर्शन हो जायेगा।** माँ हितैषी है उससे भी बच्चों को नफरत हो जाती है, बाप से नफरत हो जाती है। लोफरों से प्रीति होने लगती है तो समझो, छोरों का सत्यानाश है ! ऐसे ही परमात्मा से तो प्रेम नहीं है और मनचले विकारों के साथ हम हो गये। गुरु और ईश्वर या शास्त्र की बात में तो विश्वास नहीं, उस पर चलते नहीं और काम, क्रोध, लोभ, मोह- ये वृत्तियाँ जैसा बोलती हैं ऐसा ही हम करने लगे, इसीलिए दुःख मिटता नहीं सुख टिकता नहीं। नहीं तो सुखस्वरूप आत्मा है, फिर भी मनुष्य दुःखी ! और वह दाता... दया करने में उसके पास कमी नहीं, देर नहीं, दूरी नहीं, परे नहीं, पराया नहीं। माँ परायी है क्या ? फिर भी जब लोफरों की दोस्ती में आ गये तो माँ ही परायी लग रही है, पिता ही पराये लग रहे हैं। लफंगों के मेले में आ गये तो माँ-बाप अपने नहीं लगते, वे लफंगे ही अपने लगते हैं। ऐसे ही अपन लोग भी लफंगों की दोस्ती में आ गये कि 'जरा इतना कर लूँ, जरा ऐसा कर लूँ...' मनचाही...

अब लफंगों के कहने से बचने के लिए क्या करें ? कोई-न-कोई कसम खा लो कि भई ! इतनी लफंगों की बात नहीं मानूँगा और इतनी माँ-बाप और सद्गुरु की मानूँगा। हितैषियों के पक्ष में थोड़ा निर्णय करो और लफंगों के पक्ष के निर्णय तुरंत न करो, जल्दी अमल में न लाओ; उनमें कटौती करते जाओ - यही उपाय है।

तो खा लोगे कसम ? कि हम आवाराओं की सब बातें नहीं मानेंगे। माँ-बाप और संत हमारे हितैषी हैं, उनकी बात मानेंगे। संत भी माई-बाप होते हैं। तो रात को सोते समय भगवान का सुमिरन करके फिर सोना और सुबह उठो तो चिंतन करो कि 'हम आवाराओं के प्रभाव में नहीं रहेंगे, अब प्रभु तेरे प्रभाव में रहेंगे। तू सम है, तू शांत है, तू नित्य है, सुख-दुःख अनित्य हैं। हम अनित्य से प्रभावित नहीं होंगे, नित्य की स्मृति नहीं छोड़ेंगे। वाह-वाह !' तो दुःख के कितने भी पहाड़ आ जायें, आप उनके सिर पर पैर रखकर ऊपर होते जाओगे। जो जितना विघ्न-बाधा और मुसीबतों से जूझते हुए ऊपर जाता है वह उतना महान हो जाता है। ❑

(पृष्ठ ९ का शेष)

ऊधो ! मोहे संत सदा अति प्यारे।

ऐसा नहीं कि संत भगवान की भक्ति करते हैं, खुशामद करते हैं, नहीं। संत और भक्त भगवान को प्यार करते हैं तो भगवान भी उन्हें प्यार करते हैं। प्यारे प्यारों को प्यारे ही होते हैं। राजा ने खूब अनुनय-विनय करके पुजारी को और महात्मा को मना लिया तो भगवान ने कहा : ''चलो भाई ! अब हम भी आयेंगे लेकिन इस बात की लोगों को स्मृति कैसे रहेगी ?''

शेषनागजी ने कहा : ''महाराज ! हम आपके ऊपर छाया करते थे, अब आप जाकर फिर उलटे लौटे हैं तो हम भी उलटे ही रहेंगे।''

आप आज भी कांची के मंदिर में जाकर देख सकते हो, शेषशायी भगवान नारायण के ऊपर छाया करनेवाले शेषनाग का फन उलटा है। ❑

गुलाम कौन ?

- पूज्य बापूजी

एक बार बायजिद नाम के अलमस्त फकीर किसी जंगल में घूम रहे थे । यह उस जमाने की बात है जब गुलाम बेचे व खरीदे जाते थे । वहाँ आठ डकैतों के एक टोले ने उनको देखा और सोचा कि 'यह हट्टा-कट्टा आदमी यदि हमारे पास आ जाय तो इसको बेचकर हमें खूब पैसे मिलेंगे ।' उन्होंने विचार किया कि 'इसको पकड़ा जाय ।' वे उनके नजदीक गये । ज्यों नजदीक गये त्यों हिम्मत हार बैठे, जबकि वे आठ थे और ये एक !

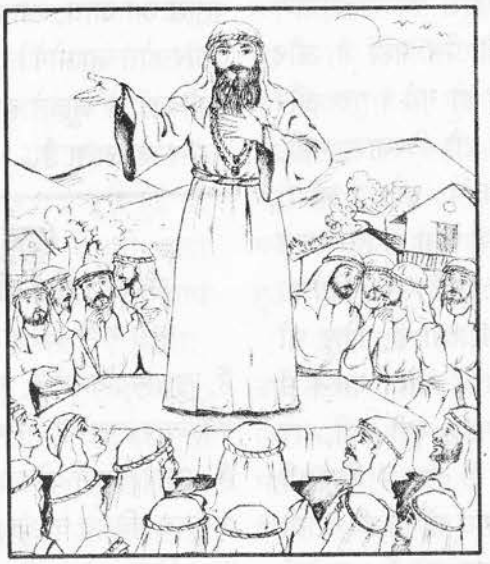

फकीर ने कहा : ''भाई ! क्या बात है ? जब हम निर्भय हैं तो तुम डरते क्यों हो ?''

बोले : ''हमें आपको देखकर डर लगता है ।''

''तुम आठ हो और मैं एक हूँ । मैं तुमको कुछ करूँगा नहीं । आओ, नजदीक आओ; बोलो क्या बात है ?''

''वह क्या है कि महाराज !...''

''कहो-कहो, क्या चाहते हो ? क्या मर्जी है ?''

''हम चाहते कुछ नहीं हैं । हम लोग लुटेरे हैं, डकैत हैं, डाका डालते हैं; आदमियों को पकड़के ले जाकर बेच भी देते हैं, ऐसे हम अपना गुजारा चलाते हैं । हम आपको पकड़ने आये हैं लेकिन आपसे डर लगता है ।''

''नहीं, डरने की कोई बात नहीं । पकड़ लो ।''

''हम आपको गुलाम बनाने को आये हैं । हम आपको बेचने को ले जायेंगे ।''

''अच्छा जी ! समझो, हम बन गये गुलाम । गुलाम बनना तो हमारे हाथ की बात है । जब हम अपने मन के स्वामी हैं तो थोड़ी देर गुलाम का भी अभिनय कर लेंगे तो क्या फर्क पड़ता है ! लो, बन गये गुलाम । अच्छा, अब क्या कहते हो ?''

''फिर हम आप पर रस्से डालेंगे और घसीटकर ले जायेंगे ।''

''जब मैं न चलूँ तब रस्से की जरूरत है, मैं तो चल रहा हूँ तुम जहाँ भी कहो ।''

वे आदमी चकित हो गये कि 'यह अजीब आदमी है ! आज तक पतले-दुबले, हलके-से-हलके आदमी ने भी हमसे हाथापाई की है, झपाझपी की है और यह पहला शिकार है जो हमारे अनुकूल है ।'

ज्ञानी सबके अनुकूल हो जाते हैं । वे (फकीर) आगे-आगे जा रहे हैं और ये पीछे-पीछे जा रहे हैं । बायजिद बाजार में लाये गये, मंच पर चढ़ाये गये । गुलाम को खरीदनेवाले लोग इकट्ठे हुए । लोग फकीर को देखके ठगे-से रह गये ।

'लगाओ आवाज, लगाओ आवाज... आवाज लगाओ, आवाज लगाओ...' - वे डाकू कह रहे हैं

लेकिन कोई आवाज नहीं लगाता। सबको वे अच्छे तो लग रहे हैं लेकिन उनको खरीदने की किसीमें हिम्मत नहीं है। **ज्ञानी को खरीदने की हिम्मत भी तो चाहिए। देखते-देखते आखिर में बायजिद ने कहा : ''है कोई गुलाम, शहंशाह को खरीदनेवाला ? है कोई गुलाम, मालिक को खरीदनेवाला ?''**

तब उन आठ आदमियों ने कहा : ''यह क्या बात है ! आपको तो हम गुलाम बनाकर लाये हैं। आप ऐसा क्यों बोलते हो, हमारा धंधा तोड़ोगे ?''

लोगों ने कहा : ''देखो, ये क्या बोलते हैं ?''

तब वे फकीर बोलते हैं : ''हाँ, मैं सही कहता हूँ। आवाज लगाओ, कोई गुलाम है स्वामी को खरीदनेवाला ?''

कोई खरीदनेवाला नहीं मिला, उनके बदले में दो पैसे देनेवाला भी नहीं मिला। ज्ञानी दो पैसे में भी नहीं बिक सकता क्योंकि वह अमूल्य है। लोगों ने जब पूछा : ''यह क्या बात है ?''

बायजिद ने कहा : ''बात क्या है, पूछो इनसे गुलाम कौन है ? स्वामी आगे-आगे आये और गुलाम पीछे-पीछे आये। ये मेरे से डर रहे हैं, मैं थोड़े ही इनसे डरा हूँ ! स्वामी डरता है कि गुलाम डरता है ? गुलाम डर रहे हैं, स्वामी निर्भय है। तो गुलाम कौन है ? ये गुलाम हैं, मैं स्वामी हूँ। स्वामी ऊपर होता है सेवक नीचे होते हैं। ये सेवक हैं। है कोई सेवक, स्वामी को खरीदनेवाला ?''

महाराज ! डाकुओं की तौबा हो गयी, वे वहाँ से भाग गये। जो अपने-आपसे बँधा नहीं, उसको और कौन बाँध सकता है ! जो अपने-आपका स्वामी है, उसको दास बना भी कौन सकता है ! **बहुनात्र किमुक्तेन...** अब बुद्धत्व को उपलब्ध ऐसे महापुरुषों के लिए ज्यादा क्या कहा जाय ? इतना ही समझ जाओ।

इस कथा के पीछे आशय **(शेष पृष्ठ १९ पर)**

बहती अमृत की धार

परम पूज्य बापूजी को, अभिनंदन बारम्बार।
'ऋषि प्रसाद' के अंकों में, बहती अमृत की धार ॥
भगवद्भक्ति प्रेम परहित का, बापूजी देते संदेश।
मानव को मानवता का, वे देते हरदम सदुपदेश ॥
जन-जन को अच्छे लगते हैं,
उनके भक्तिपूर्ण उद्गार।
'ऋषि प्रसाद' के अंकों में, बहती अमृत की धार ॥
जन-जन का अज्ञान मिटाकर,
वे दिखलाते सच्ची राह।
जिन पे होती है अनुकम्पा,
उनको देते ज्ञान अथाह ॥
उनका केवल एक लक्ष्य है,
सुखमय हो सारा संसार।
'ऋषि प्रसाद' के अंकों में,
बहती अमृत की धार ॥
अंधकार जिससे मिट जाये,
ज्ञान ज्योति वह हम सब पायें।
गुरुवर की अनुकम्पा से हम,
सत्पथ पर बढ़ते ही जायें ॥
सुखद आपका आश्रय पाकर,
भगवन्मय हो हर परिवार।
'ऋषि प्रसाद' के अंकों में,
बहती अमृत की धार ॥
'ऋषि प्रसाद' सबके जीवन में,
भर दे पावन दिव्य प्रकाश।
भक्तों के प्यारे बापूजी,
चिरंजीवी हों यह अरदास ॥
उनसे ज्ञान प्राप्त कर हम सब,
हो जायें भवसागर पार।
'ऋषि प्रसाद' के अंकों में,
बहती अमृत की धार ॥

- डॉ. त्रिलोकसिंह
ग्रा. हिन्दूपुर, इलाहाबाद (उ.प्र.)।

सामान्य में शांति, विशेष में विरोध

एक नन (ईसाई साध्वी) बाइबिल पढ़ते-पढ़ते इस नतीजे पर आयी कि 'सर्वत्र ईसा भगवान हैं और सबको देखते हैं' तो वह स्नानघर में जाय, स्नान करे लेकिन कपड़े न उतारे क्योंकि जब सर्वत्र हैं, सबको देखते हैं तो मैं गॉड के आगे नग्न कैसे होऊँ ? यहाँ तक कि वह मैली हो गयी। स्नान के समय तो कपड़े उतारे नहीं और हाजत के समय भी उसके लिए कपड़े उतारना मुश्किल होने लगा क्योंकि उसने पक्का कर लिया कि 'सर्वत्र भगवान हैं और सबको देखते हैं।' अन्य साध्वियों ने समझाया कि 'ये तो किताबों के वचन हैं।' बोले : 'नहीं, मैं धोखा नहीं करूँगी; मैं तो अमल करूँगी। सर्वत्र भगवान हैं और वे देखते हैं तो मुझे आदर करना चाहिए।' अब उसके लिए तो जीना मुश्किल हो गया।

फिर वह सहेलियों के साथ किसी सूफी फकीर के पास पहुँची। उन्होंने कहा कि ''तुम दो आँखों और अंतःकरण से जिन रूपों में खुदा को देखते हो, खुदा उन रूपों में ही सीमित नहीं है, वह सर्वत्र है। तो व्यापक परमात्मा परिच्छिन्न (आँख आदि) को नहीं दिखता बल्कि वह परिच्छिन्न जिनसे देखा जाता है उन मन-बुद्धि इन देखनेवालों को भी वह परमात्मा देखता है। जब सर्वत्र भगवान हैं तो कपड़ों के अंदर भी हैं, कपड़ों के बाहर भी हैं, उनसे तू क्या छुपायेगी ?''

तो सामान्य सत्ता, सामान्य चेतना तो सर्वत्र है, उससे आप कुछ छुपा नहीं सकते।

दो प्रकार के चेतन होते हैं, व्यवहार में कहना पड़ता है - एक सामान्य चेतन और दूसरा विशेष चेतन। जैसे धूप सर्वत्र है, यह सामान्य धूप है और इसी धूप ने मकान को, दुकान को, दिवार को प्रकाशित किया है। अब आप आईना लेकर दिवार पर प्रतिबिम्ब गिरायेंगे तो आईने के प्रतिबिम्ब (धूप के विशेष रूप) ने भी दिवार को प्रकाशित किया। तो दिवार को दो प्रकाशों ने प्रकाशा - एक सामान्य ने और दूसरा विशेष ने। तो आईने की उपाधि (कारण, सीमा) से दो धूप हो गयीं न ! ऐसे ही चेतन परमात्मा एक होते हुए भी अंतःकरण की उपाधि से विशेष चेतन हो गया, दो हो गया। तो सामान्य चेतन को कोई झंझट नहीं, कोई आपत्ति नहीं, वह शांत है, उसमें कोई खटपट नहीं लेकिन विशेष में गड़बड़ है। उसको शास्त्रीय भाषा में 'चिदाभास' भी कहते हैं, 'जीव' भी कहते हैं, 'अंतःवाहक' भी कहते हैं, 'जीवात्मा' भी कहते हैं। बहुत-बहुतेरे उसके नाम हैं। कहते हैं : 'आत्मा निकल गया, यह मर गया। इसमें आत्मा वापस आ गया। इसका आत्मा यमराज के पास ले गये...' तो विशेष को ले गये। विशेष को ले गये तो सामान्य से कहीं जगह खाली नहीं हुई। उपाधि जहाँ गयी वहाँ विशेष की प्रतीति हुई।

तो सामान्य चैतन्य किसीका विरोधी नहीं, कहीं आता-जाता नहीं। जैसे लकड़ी में सामान्यरूप से आग छुपी है और वे लकड़ियाँ गोदाम में पड़ी हैं और गोदाम में घना अँधेरा है। टनों-की-टन लकड़ी पड़ी है, कितनी आग मिल सकती है लेकिन फिर भी अँधेरा है क्योंकि उसमें सामान्यरूप से अग्नि है। समुद्र में बड़वानल है

लेकिन पानी से बुझता नहीं। सामान्य है इसलिए, विशेष हो तो बुझ जाय। पेट में जठराग्नि है लेकिन शरीर को जलाती नहीं क्योंकि वह सामान्यरूप में निहित (छुपी) है। बाहर थोड़ी-सी अग्नि जलेगी तो कोयला कर देगी लेकिन अंदर जठराग्नि न हो तो आप जी भी नहीं सकते।

तो सामान्यरूप में निहित जो चैतन्य है वह किसीका विरोधी नहीं। जैसे - ये लकड़े-बल्लियाँ हैं, इनमें सामान्यरूप में अग्नि निहित है लेकिन आपको कभी सेंक नहीं आयेगा। सामान्य चैतन्य सर्वत्र छुपा है, ओतप्रोत, भरपूर है और जहाँ-जहाँ अंतःकरण है वहाँ-वहाँ विशेष चैतन्य है। जीव और साक्षात्कार, बंधन, जप-तप, स्वर्ग-नरक, पुण्य-पाप, हाथी होना, हिरण होना, बहेलिया होना, ब्राह्मण होना, पथिक होना, गुरु होना, शिष्य होना, जी जाना, मर जाना, ईश्वर हो जाना - यह सब सामान्य की सत्ता से विशेष में व्यवहार होता है। ❑

(पृष्ठ १७ का शेष) यह है कि तुम उस बुद्धत्व को उपलब्ध होने के लिए ही मनुष्य-जन्म पाकर इस संसार में आये हो। मजूरी करके पच मरने के लिए संसार में नहीं आये। मनुष्य-जन्म जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होने के लिए मिला है और यह समझ मिलती है सत्संग से। लेकिन मनुष्य अपनी वासनाओं का गुलाम होकर तीर्थों में मनौतियाँ तो मानता है परंतु सत्संगरूपी तीर्थ में गोता नहीं लगाता। तीर्थों में जाना अच्छा तो है पर तीर्थवास करनेवालों से भी जो सत्संग के तीर्थ में जाते हैं, वे श्रेष्ठ हैं और सत्संग में जानेवाले हजारों में से भी वे श्रेष्ठ हैं जिनको सत्संग के वचन बार-बार सुनने की रुचि होती है। **जाके श्रवण समुद्र समाना।** और उनमें भी वे श्रेष्ठ हैं जिनके मन को सत्संग सुनकर शांति मिलती है तथा उन शांति पानेवालों में भी वे श्रेष्ठ हैं जिन्होंने परमात्मतत्त्व को जान लिया; वे ज्ञानी हैं। ❑

प्रश्न : गुरुजी ! परमात्मप्राप्ति के लिए मासिक धर्मवाली स्त्री के हाथ का बनाया हुआ भोजन न करना, जहाँ-तहाँ न बैठना आदि नियमों का पालन करना जरूरी है या सिर्फ परमात्मा के प्रति तड़प बढ़ाने से ही परमात्मप्राप्ति हो सकती है ?

पूज्य बापूजी : परमात्मप्राप्ति के लिए नियमों का पालन करेंगे तभी तड़प जगेगी और तड़प जगेगी तभी परमात्मप्राप्ति होगी। परमात्मप्राप्ति की तड़प बढ़ानी है और मासिक धर्मवाली स्त्री के हाथ का खा लिया, पिक्चर देखने गये और जो जी में आया वह खा लिया, जो जी में आया वह कर लिया तो यह बेवकूफी है। जितना आहार शुद्ध होगा उतना व्यवहार शुद्ध होगा।

प्रश्न : यदि घर का कोई सदस्य बीमार हो और उसके लिए हम जप-अनुष्ठान आदि करें तो उसका फल उसे मिलता है या नहीं ?

पूज्य बापूजी : अवश्य मिलता है।

प्रश्न : गुरुदेव ! आत्मसाक्षात्कार हो जाने पर दुनिया कैसी लगती है ?

पूज्य बापूजी : आत्मसाक्षात्कार हो जाने पर दुनिया जैसी तुमको दिखती है वैसी ही दिखती है लेकिन तुमको दिखती है सच्ची और उनको (साक्षात्कारी महापुरुष को) दिखती है बदलती हुई। जैसे तुमको रस्सी में साँप दिखता है तो पहले तुम काँपते हो, डरते हो। फिर जब तुम नजदीक जाकर टॉर्च मारके देखते हो कि यह तो साँप नहीं रस्सी है तो एकदम निर्भय हो जाते हो।

अब उसी जगह फिर से आ जाते हो तो साँप जैसा तो दिखेगा लेकिन अब साँप का डर, साँप की सच्चाई नहीं रहेगी। ऐसा नहीं होगा कि साँप है, धरती में दरार है या लकीर है। वैसे ही एक बार आत्मसाक्षात्कार हो गया तो फिर संसार के सुख की कामना नहीं रहती, अपने-आपमें ही तृप्ति, संतुष्टि रहती है। मन से उसकी कामना-वासना मिट जाती है। फिर भी वे महापुरुष कामना-वासना का आचरण करते हुए दिखते हैं क्योंकि प्रारब्धवेग से जो करना पड़ता है वह वे करते हैं परंतु जैसे बहते पानी में लकीर। श्रीकृष्ण युद्ध का संचालन भी करते हैं परंतु अंदर से अपने सुख के लिए कोई वासना नहीं है।

जैसे पहले मरुभूमि में पानी दिखता था, फिर जब मरुभूमि को मरुभूमि जान लिया तो अब मरुभूमि कैसी दिखेगी ? पहले की नाईं दूर से पानी तो दिखेगा परंतु उसकी पोल खुल गयी होती है। ऐसे ही ज्ञानी के आगे जगत के आकर्षण की पोल खुल जाती है।

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण को पूछा था :

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।

'हे केशव ! समाधि में स्थित परमात्मा को प्राप्त हुए स्थिरबुद्धि पुरुष का क्या लक्षण है ?'

भगवान ने कहा :

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

'हे अर्जुन ! जिस काल में यह पुरुष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भलीभाँति त्याग देता है और आत्मा से आत्मा में ही संतुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।'

(गीता : २.५४-५५)

ब्रह्मज्ञानी को अपना-आपा केवल इस शरीर में नहीं, अनंत ब्रह्मांडों में व्याप रहा है ऐसा अनुभव होता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभीको ब्रह्मवेत्ता अपने में ही पाता है। ब्रह्मज्ञानी को बाहर से पूरा नहीं नापा जा सकता।

प्रश्न : कैसे जानें कि हमारे कर्म सत्कर्म हैं या पापकर्म ?

पूज्य बापूजी : कर्म के फलस्वरूप आपके अंतःकरण में शांति फलित हुई, पुण्य फलित हुआ, आनंद फलित हुआ तो समझ लो अंतर्यामी ईश्वर आप पर प्रसन्न हुए हैं, आप सत्कर्म कर रहे हैं और अगर अशांति व उद्वेग फलित हुआ है तो आप पापकर्म कर रहे हैं।

प्रश्न : शास्त्र किसे कहते हैं ?

पूज्य बापूजी : शास्ति इति शास्त्रम्। या **शासयति इति शास्त्रम्।** जो आपकी मनमुखता एवं उच्छृंखलता को रोककर ठीक रास्ते पर लगने की प्रेरणा दे, आपकी इन्द्रियों और मन को अनुशासित करके पतन से बचाकर ऊर्ध्वमुखी करे उस ज्ञान का वर्णन जिन ग्रंथों में है उनको 'शास्त्र' कहते हैं। ❑

ऐसा देख, रह जाये एक

अपने को कोसो मत : 'हाय रे हाय ! मैं तो गरीब आदमी हूँ।' शबरी की गरीबी के आगे तेरी गरीबी क्या है ! और अपने को अहंकार से भरो मत : 'मैं तो बड़ा धनवान हूँ।' राजा जनक के धन-वैभव के आगे तेरे पास क्या धन है ! न तू गरीब है, न तू अमीर है; तू तो भगवान का है और भगवान तेरे हैं। तू अनअहंवादी बन। गरीबी का, अमीरी का, सुख का, दुःख का अहं मत कर। 'निंदा हो रही है, लांछन लग रहे हैं, हाय रे हाय ! मेरी बेइज्जती हो रही है', ऐसे अपने को कोस मत। 'वाह-वाह हो रही है, प्रशंसा हो रही है', ऐसा करके अपने अहं को पोस मत। तू तो देखता चला जा, सब बीत रहा है...

यह भी देख, वह भी देख।
देखत-देखत ऐसा देख,
मिट जाये धोखा रह जाये एक॥

परमात्मा उसीका है...

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

मनुष्य को वस्तुओं की कद्र करना सीखना ही चाहिए। काम में आनेवाली वस्तुएँ इधर-उधर पड़ी रहें, यह ठीक नहीं है। किसी घर में वर्षों से एक पुराना साज पड़ा था। उसने घर के कोने में जगह रोक रखी है, ऐसा सोचकर दिवाली के दिनों में घरवालों ने उसे निकालकर जहाँ कूड़ा फेंका जाता था वहाँ डाल दिया। कोई संगीतज्ञ फकीर वहाँ से गुजरा तो उसने देखा कि पुराना साज कूड़े में पड़ा है। उसने साज उठाया, साफ किया और उस पर उँगलियाँ घुमायीं तो साज से मधुर स्वर निकलने लगा। लोग आकर्षित हुए, भीड़ हो गयी। यह वही साज था जो वर्षों तक घर में पड़ा था। घरवाले भी मुग्ध होकर बाहर निकले और बोले : ''यह साज तो हमारा है।''

तब उस संगीतज्ञ ने कहा : ''यदि यह तुम्हारा होता तो घर में ही रखते। तुमने तो इसे कूड़े में फेंक दिया, अतः अब यह तुम्हारा नहीं है।''

साज उसीका है जो बजाना जानता है।
गीत उसीका है जो गाना जानता है।
आश्रम उसीका है जो रहना जानता है।
परमात्मा उसीका है जो पाना जानता है॥

मनुष्य-जीवन बहुत अनमोल है, हमें इसकी कीमत का पता नहीं है। जो आया सो खा लिया... जो आया सो पी लिया... जिस-किसीके साथ उठे-बैठे... स्पर्श किया... इन सबसे जप-ध्यान में तो अरुचि होती ही है, साथ ही विषय-विकारों में, मेरे-तेरे में, निंदा-स्तुति में व्यर्थ ही अपना समय खो देते हैं। फिर हम न तो अपने किसी काम में आ पाते हैं और न ही समाज के। मनुष्य अगर अपने तन-मनरूपी साज को बजाना सीख जाय तो मृत्यु के पहले आत्मानंद के गीत गूँजेंगे।

यदि आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होना है तो साधक को विशेष सावधानी रखने की जरूरत है। जिसे आध्यात्मिक लाभ की कद्र नहीं, जिसके जीवन में दृढ़ व्रत नहीं है, दृढ़ता नहीं है और जो भगवान का महत्त्व नहीं जानता, उसको भगवान के धाम में भी रहने को मिल जाय फिर भी वहाँ से गिरता है बेचारा। जय-विजय भगवान के धाम में रहते थे किंतु भगवान के महत्त्व को नहीं जानते थे तो गिरे। जो अपने जीवन का महत्त्व जितना जानता है, उतना ही सत्संग का, महापुरुषों का महत्त्व जानेगा। जिसको मनुष्य-जन्म की कद्र नहीं है, वह अभागा महापुरुषों की, सत्संग की भी कद्र नहीं कर सकता। जिसको अपनी मनुष्यता की कद्र है, उसको संतों की भी कद्र होगी, सत्संग की भी कद्र होगी, वह अपनी वाणी को व्यर्थ नहीं जाने देगा, अपने समय को व्यर्थ नहीं जाने देगा, अपनी सेवा में निखार लायेगा, अपना कोई दुराग्रह नहीं रखेगा, गीता के ज्ञान में दृढ़व्रती होगा। **भजन्ते मां दृढव्रताः।** और वह समता बनाये रखेगा, अपने जीवनरूपी साज पर कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग से **'सोऽहम्'** स्वरूप के गीत गुंजायेगा। इस अमूल्य मानव-देह को पाकर भी इसकी कद्र न की तो फिर मनुष्य-जन्म **(शेष पृष्ठ २३ पर)**

एक बार अकबर व बीरबल महल में किसी चर्चा में व्यस्त थे, तभी एक चौधरी आये और अकबर के पैरों में पड़कर फूट-फूटकर रोने लगे। अकबर के पूछने पर चौधरीजी बोले : ''जहाँपनाह ! मैं तो लुट गया, बर्बाद हो गया। मेरी जीवन भर की सारी पूँजी, कीमती जवाहरात आदि एक संदूक में रखे थे, उसे कोई चुराके ले गया। अगर वह नहीं मिला तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा।''

बादशाह बीरबल की ओर देखने लगे। बीरबल ने चौधरीजी से पूछा : ''चोरी के पीछे आपको किसका हाथ लगता है ?''

चौधरीजी : ''इस संदूक की जानकारी मेरे परिवार के अलावा केवल पाँच नौकरों को ही थी, जो कि मेरे मकान में कई वर्षों से रहते हैं। हो सकता है चोर इन पाँचों में से ही कोई हो।''

अगले दिन बीरबल ने पाँचों नौकरों को बुलवाया व उनसे पूछताछ की। बीरबल बोला : ''सीधे से बता दो कि संदूक तुममें से किसने चुराया है, नहीं तो तुम्हें कड़ी सजा दी जायेगी।''

रसोइया बोला : ''हम ब्राह्मण कुल में जन्मे हैं, चोरी तो हमारे संस्कारों में ही नहीं है।''

चौकीदार बोला : ''चौधरीजी तो हमारे अन्नदाता हैं। हमने इनका नमक खाया है, इनके घर हम चोरी कैसे कर सकते हैं ?''

माली बोला : ''भगवान कसम बाबूजी ! इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता।''

इसी प्रकार अन्य दो नौकरों ने भी अपनी सफाई देते हुए स्वयं को निर्दोष बताया।

बीरबल समझ गया कि घी सीधी उँगली से निकलनेवाला नहीं है। अतः वह आज्ञाचक्र पर ध्यान करके कुछ पलों के लिए शांत हो गया। उसने बचपन से गुरुचरणों में बैठकर सारस्वत्य मंत्रजप, ध्यान, मौन आदि का अभ्यास किया था, जिससे उसकी सुषुप्त शक्तियाँ (बुद्धिशक्ति, अनुमानशक्ति आदि) विकसित हो गयी थीं।

शांत होनेमात्र से इन सुषुप्त शक्तियों के द्वार खुल जाते हैं और असम्भव दिखनेवाले कार्य भी सरल हो जाते हैं। अब बीरबल को एक उपाय सूझा। उसने एक समान लम्बाई की पाँच लकड़ियाँ मँगवायीं और एक ज्योतिषी को भी बुलवा लिया।

बीरबल ने नौकरों को ज्योतिषी का परिचय देते हुए कहा : ''ये हमारे नगर के प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं। ये तुम सबका हाथ देखेंगे और फिर मंत्र फूँककर तुम पाँचों को एक ऐसी लकड़ी देंगे, जिसकी लम्बाई चोर के पास जाते ही रातोंरात चार अंगुल बढ़ जाती है। अब जो भी चोर होगा, उसकी लकड़ी की लम्बाई बढ़ जायेगी और वह पकड़ा जायेगा।''

बीरबल के बताये तरीके से सबको एक-एक लकड़ी दी गयी और अगले दिन चौधरी सहित सारे नौकरों को दरबार में पेश होने का आदेश दिया गया। सभी लकड़ी लेकर चले गये। अब चोर की अशांति का ठिकाना न रहा। उसकी नींद हराम हो गयी, दंड के भय से वह रात भर बचाव का उपाय खोजता रहा। अंततः उसने अपने को बचाने के लिए एक रास्ता खोज निकाला।

जैसे-तैसे सुबह हुई। चौधरी सहित पाँचों नौकर दरबार में हाजिर हुए। बीरबल ने सबकी लकड़ियों की जाँच की और वह जोर-से हँस पड़ा, बोला : ''**चोर की दाढ़ी में तिनका।** बादशाह सलामत ! चोर पकड़ा गया।''

सभी बड़ी उत्सुकता से बीरबल की ओर

देखने लगे । बीरबल ने कहा : ''चौधरी साहब ! संदूक आपके चौकीदार के पास है । उसे यह डर था कि चोरी करने की वजह से उसकी लकड़ी की लम्बाई बढ़ जायेगी, अतः उसने अपनी लकड़ी काटकर छोटी कर दी और पकड़ा गया !''

चौकीदार अपनी करनी पर बड़ा शर्मिंदा हुआ । बादशाह ने उसे संदूक वापस करने का आदेश दिया, साथ ही सजा के तौर पर कारागार में डलवा दिया ।

करम प्रधान बिस्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥

(श्री रामचरित. अयो.कां. : २१८.२)

संदूक मिलने की बात सुनते ही चौधरी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । बादशाह सहित सभीने बीरबल की सूझबूझ की दाद दी ।

कोई कितना भी प्रयास करे लेकिन देर-सवेर सच सामने आ ही जाता है, ठीक वैसे ही जैसे अँधेरा चाहे जितना घनघोर हो, प्रकाश की किरणें उसे चीरकर प्रकट हो जाती हैं । यह सब जानते हुए भी हम व्यवहार में अपने तुच्छ स्वार्थों के वशीभूत होकर झूठ का सहारा लेते हैं । फिर एक झूठ के पीछे सौ झूठ बोलकर, कपट करके अपने को बचाने का प्रयास करते हैं । पर शास्त्र कहते हैं :

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥

'अपना किया हुआ जो भी कुछ शुभ-अशुभ कर्म है, वह अवश्य ही भोगना पड़ता है । बिना भोगे तो सैकड़ों-करोड़ों कल्पों के गुजरने पर भी कर्म नहीं टल सकता ।' अतः छल-कपट करके नश्वर धन कमाने की अपेक्षा सच्चाई का आश्रय लेते हुए संतोष धन, चरित्र धन को बढ़ाने में ही समझदारी है ।

गोधन गजधन रतन धन, कंचन खान सुखान ।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूली समान ॥

❐

पहेलियाँ

(१)

कुत्ते की बैठक, हिरण की चाल ।
वह कौन है बोलो, आज ही आज ॥

(२)

पानी से निकला पेड़ एक,
पत्ते नहीं पर डाल अनेक ।
उस पेड़ की ठंडी छाया,
पर नीचे कोई बैठ न पाया ॥

(३)

यह हमको देती आराम,
यह ऊँची तो ऊँचा नाम ।
बड़े-बड़े लोगों को देखा,
इसके लिए करते संग्राम ॥

(४)

यदि मुझको उलटाकर देखो,
लगता हूँ मैं नव जवान ।
मुझसे कोई पृथक् न रहता,
पेड़, पौधा, पशु, बूढ़ा या जवान ॥

उत्तरों हेतु प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक की ।

(पृष्ठ २१ का शेष) पाने का क्या अर्थ है ? फिर तो जीवन व्यर्थ ही गया । यह मनुष्य-जन्म फिर से मिलेगा कि नहीं, क्या पता ? अतः सदैव याद रखें कि यह मनुष्य-जन्म आत्मज्ञान, आत्मदर्शन, मुक्ति एवं अखंड आनंद की प्राप्ति के लिए ही मिला है । परमात्मा के साथ एक हो जाने के लिए मिला है । ब्रह्मानंद की मधुर वंशी बजाने के लिए मिला है । इसे व्यर्थ न खोयें । जीवनरूपी साज टूट जाय, इसकी मधुर धुन निकालने की क्षमता समाप्त हो जाय उसके पहले इसे किसी समर्थ सद्गुरु को सौंपकर निश्चिंत हो जाओ । ❐

गोझरण योगी, रोगी तथा नीरोगी सब प्रकार के व्यक्तियों के लिए दिव्य औषध है । यह पाचनतंत्र के रोगों को दूर करता है तथा शरीर में श्वेत रक्तकणों की वृद्धि करता है । गोझरण पीने और गोमय (गोबर तथा गोझरण का मिश्रण) से मालिश करने से चर्मरोग दूर होते हैं, त्वचा के छिद्र खुल जाते हैं, पसीने पर नियंत्रण होता है तथा चमड़ी की रुक्षता दूर होकर वह चमकदार व मुलायम बनती है । गोझरण में अतिरिक्त चर्बी दूर करने की अद्भुत क्षमता है । इसमें अनेक प्रकार के एसिड होते हैं, जो रक्त में मिश्रित कैन्सर की गाँठों को, चाहे वे मस्तिष्क में या शरीर के अन्य भाग में हों, पिघला देते हैं । ये एसिड गुर्दे अथवा मूत्राशय की पथरी को भी पिघलाकर शरीर से बाहर निकाल देते हैं । गोझरण वात व कफ के दोषों का नाश करता है । पित्त प्रकृतिवालों को गोझरण नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह पित्त बढ़ाता है । एलोपैथी दवाओं के बोझ से तंग आये लोग गौ-चिकित्सा पद्धति की औषधियों का इस्तेमाल कर उनसे लाभ उठा रहे हैं ।

गोबर – गाय का गोबर पृथ्वी की खुराक है । उसे बंजर भूमि पर डाल दिया जाय तो वह भूमि भी उपजाऊ हो जाती है । गोबर और गोमूत्र खाद के रूप में धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं और उत्तम कृमिनाशक बनकर फसलों की रक्षा करते हैं ।

हमारे कर्तव्य

प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने घर में गाय अवश्य रखनी चाहिए और प्रेम से उसका पालन करना चाहिए । यदि आप अपने घर को वास्तुदोष से मुक्त करना चाहते हैं तो गौ-पालन करें, घर में गाय की मूर्ति या गाय का चित्र लगायें । लोग फिल्मी एक्टरों, क्रिकेटरों, बोक्सरों, शेर, चीता, कुत्ते, बिल्ली के चित्र लगाते हैं, उनकी अपेक्षा गाय का चित्र, गौ को प्रेम करते हुए अथवा उसकी सेवा-पूजन करते हुए या दूध पीते हुए भगवान श्रीकृष्ण का चित्र लगायें तो कितना अच्छा हो !

आजकल लोग प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं, फिर उसमें जूठन, खाद्य-पदार्थ आदि डालकर फेंक देते हैं, जिन्हें खाने से वे प्लास्टिक की थैलियाँ गाय के पेट में चली जाती हैं और गाय की मृत्यु का कारण बनती हैं । इस तरह हम अप्रत्यक्षरूप से गौहत्या कर रहे हैं । **आप आज से ही सब्जी व फलों के छिलके आदि वस्तुएँ प्लास्टिक की थैलियों में भरकर फेंकना बंद कर दें और अनजाने में हो रहे गौहत्या के पाप से बचें ।**

आजकल कुत्ते और बिल्ली को घर में रखकर परिवार के सदस्य की तरह उनका पालन करना आम शौक हो गया है । लोग अपनी शान-शौकत दिखाने के लिए विदेशी नस्ल के कुत्ते तो घर में ले आते हैं, मगर एक गाय नहीं पाल सकते । कैसी विडम्बना है !

गौवंश के संरक्षण व संवर्धन के लिए विशेषरूप से देश के युवावर्ग को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करना जरूरी है । हम निश्चय कर लें कि कम-से-कम एक परिवार में एक गाय जरूर पालेंगे और गाय को कत्लखाने नहीं जाने देंगे । साथ ही आम जनता को भी गाय के प्रति जाग्रत करें । पंडित मदनमोहन मालवीयजी ने कहा है : 'यदि हम गौओं की रक्षा करेंगे तो गौएँ भी हमारी रक्षा करेंगी ।' जो लोग गाय के दूध का उपयोग कर उन्हें आहार खोजने के लिए सड़क पर खुला छोड़ देते हैं, वे गाय के साथ बड़ा अन्याय करते हैं और पाप के भागी बनते हैं ।

गाय की देखभाल का प्रश्न उठता है तो सभीकी निगाहें गौशालाओं पर जाकर ठहर जाती हैं । अनाथालय में उसीको रखा जाता है, जिसकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं होता । अपने प्रियजन

को कोई भी अनाथालय में नहीं रखना चाहेगा। गाय भी हमारे परिवार की एक सदस्या है। उसका स्थान वही है, जो माँ का है। क्या आप अपनी माँ को अनाथालय में रखकर गर्व महसूस कर सकते हैं ? यदि नहीं तो फिर अपनी गाय को भी अपने घर पर रखिये।

धन-वृद्धि के लिए धनाढ्य लोग नयी-नयी फैक्ट्रियाँ खोलते रहते हैं तो क्या अपने परिवार को हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ एवं सुखी बनाने के साथ-साथ गौसेवा का पुण्य लाभ पाने के लिए एक-एक गौशाला नहीं खोल सकते ! बड़े-बड़े नगरों में साधन-सम्पन्न लोग अपने आराम के लिए और सप्ताह के अंत में छुट्टियाँ व्यतीत करने के लिए अलग-अलग स्थानों पर बँगले बनवाते हैं और उनके रख-रखाव के लिए नौकरों की व्यवस्था करते हैं तो क्या उन बँगलों में एक गाय के रहने की व्यवस्था नहीं हो सकती ? अपने आराम के क्षणों में जो गाय की सेवा करेंगे, उन्हें इतना आनंद मिलेगा जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। गाय पालने से वातावरण सात्त्विक होगा, रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ेगी और कुटुम्ब में सुख-शांति रहेगी। ❑

विशेष सूचना

सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। सदस्यता की शुरुआत किस माह से करनी है यह भी अवश्य लिखें। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा। आजीवन सदस्यों के अलावा नये सदस्यों की सदस्यता एक माह पूर्व से शुरू की जायेगी तथा सदस्यता के अंतर्गत उन्हें एक पूर्व-प्रकाशित अंक भेजा जायेगा।

प्रमादो हि मृत्युः

- पूज्य बापूजी

मैं नियति की बात बताता हूँ। आयुर्वेद के प्रणेता धन्वंतरि वैद्य को फोड़ा निकला। दवाई, इलाज की उनको क्या कमी; उन्होंने खूब किये लेकिन ढाई-तीन साल तक वह फोड़ा ठीक नहीं हुआ, नासूर हो गया। जब वे सब उपचार करके थक गये तो उन्होंने छोड़ दिया कि '**होगा वही जो राम रचि राखा।**'

एक दिन वे दोपहर के समय अपनी झोंपड़ी के प्रांगण में लेटे थे। उस समय शायद बसंत का मौसम था। ठंडी-ठंडी हवा आ रही थी। वे शांत थे। उन्होंने क्या देखा कि एक बूटी, एक पौधा कुछ बोल रहा है।

उन्हीं लोगों के द्वारा सुंदर-सुंदर ग्रंथ बने हैं, सुंदर-सुंदर आविष्कार हुए हैं जो मौन को उपलब्ध हुए हैं, शांति को उपलब्ध हुए हैं या थोड़ा-बहुत एकांत को उपलब्ध हुए हैं; बहिर्मुख व्यक्तियों के द्वारा नहीं हुए हैं। विज्ञानी भी वे ही सफल होते हैं जो मौन रखते हैं, कम बोलते हैं और जब किसी विषय को जाँचना चाहते हैं उस समय भूल जाते हैं कि 'मैं कौन हूँ, पत्नी कहाँ है, परिवार का क्या है ?' मेरा-तेरा जब वे भूल जाते हैं, अनजाने में एकाग्रता की छोटी-मोटी गहराई में पहुँचते हैं तभी वे आविष्कार कर पाते हैं लाला !

सूक्ष्म जगत की बात को समझना है तो आपकी वृत्ति सूक्ष्म चाहिए। मैं बताया करता हूँ कि 'टीवी और रेडियो की तरंगों को देखना हो तो उस प्रकार का यंत्र चाहिए।' अभी यहाँ टीवी और रेडियो की

तरंगें हैं, उनमें गाने हैं, समाचार हैं, कई स्टेशन गूँजते हैं और सुनने के कान भी आपके पास हैं लेकिन फिर भी सुनायी नहीं पड़ते, दिखायी नहीं पड़ते क्योंकि आपके पास इस समय टीवी, रेडियो नहीं है। ऐसे ही सूक्ष्म जगत में भी बहुत कुछ है, जब उस प्रकार का यंत्र अंदर क्रियान्वित हो जाता है तो आपको दिखता है, उनकी बातें सुनायी पड़ती हैं। आधा घंटा भी आप यदि निःसंकल्प दशा में प्रविष्ट होते हैं तो आपका सूक्ष्म लोकों के साथ संबंध हो जाता है; आप सूक्ष्म लोकों की गतिविधियों को जान सकते हैं, देवताओं की चर्चा को समझ सकते हैं, इंद्र की सभा किस समय विसर्जित होती है, संसद भवन में क्या-क्या चर्चा हुई - यह सब आप जान सकते हैं, और क्या-क्या होगा यह भी समझ सकते हैं। आपके अंदर इतनी क्षमता है ! बीज में पूरा वटवृक्ष छुपा हुआ है। बीज को यदि कोई कह दे कि 'तू वटवृक्ष है।' तो इनकार करता है लेकिन संयोग आ जाय तो सचमुच वह है। जैसे मोर की चोंच, उसकी जिह्वा, उसकी आँख, उसके कान, पंख और पैर सब उसके अंडे में छुपे हैं, ऐसे ही सारा ब्रह्माण्ड आपके पिंड में छुपा है। संयोग आये तो विकसित हो जाय, कोई बड़ी बात नहीं। **यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।** विश्व की यात्रा करनी हो तो आप भीतर की यात्रा कर लो। दुनिया को जानना है तो आप अपने को जान लो। ईश्वर को पाना है तो आप अपने को पा लो फटाफट।

जड़ी-बूटी धन्वंतरि वैद्य से कुछ बात कर रही थी। बूटी ने कहा कि ''आपने इतना-इतना कष्ट सहा है। मैं तो आपके प्रांगण में उगी हूँ। मेरी कोई कद्र नहीं, मेरी कोई गिनती नहीं। अब उठिये, जल्दी करिये, मेरा प्रयोग कीजिये।''

उन्होंने उस बूटी को तोड़ा, घोंटा और घाव पर लगाया; वे ठीक हो गये। बोले : ''अरे पगली ! जब तू जानती थी कि तेरे को लगाने से मैं ठीक हो जाऊँगा तो तू पहले क्यों नहीं बोली ? तीन साल पहले भी तो तू यहाँ थी ? इन पहाड़ी इलाकों में तो तेरा जंगल-ही-जंगल है।''

बूटी ने कहा : ''धन्वंतरिजी ! उस समय आपका तरतीव्र प्रारब्ध था। अब मिटने को है तभी मैं बोली हूँ।

अवश्यंभावी नु भावानां प्रतिकारो भवेद् यदि।

जो अवश्यम्भावी है उसका प्रतिकार नहीं होता। आपका दुःख भोगना अवश्यम्भावी था इसलिए मैं नहीं बोली और अब वह अवश्यम्भावी हट गया है इसलिए मैं बोली हूँ। अब आप थोड़ा-सा पुरुषार्थ करेंगे तो सफल हो जायेंगे।''

तो फोड़ा होना अवश्यम्भावी हो सकता है लेकिन अज्ञानी होना अवश्यम्भावी कभी नहीं हो सकता। आपका अज्ञानी होना अवश्यम्भावी नहीं है, जन्म-मृत्यु के चक्कर में आना अवश्यम्भावी नहीं है। आपका आलस्य है, आपका प्रमाद है, आपकी लापरवाही है, आप अपने साथ अन्याय करते हैं इसलिए माता के गर्भ में उलटा होकर लटकना पड़ता है, ऊँट होकर भटकना पड़ता है, गधा होकर बोझा उठाना पड़ता है, कुत्ता होकर भौंकना पड़ता है, मंजरी होकर वन में खिलना पड़ता है, पक्षी होकर चैं... चैं... करना पड़ता है; यह प्रमाद का ही फल है।

प्रमादो हि मृत्यु आख्याम इति श्रुतौ।

'प्रमाद ही मृत्यु है ऐसा श्रुति कहती है।'

आपका प्रमाद, आपकी लापरवाही, आपकी बेवकूफी आपको जन्म-मरण में ले जाती है वरना जन्म-मरण में ले जानेवाला कोई प्रारब्ध नहीं बैठा है, कोई 'अवश्यम्भावी' नहीं बैठा है। यह हम लोगों का अज्ञान है जो हम अपने को कर्ता मानकर संसार में सुख ढूँढ़ते हैं और वासनाओं के पीछे दीन होते हैं इसीलिए जन्म-मरण होता है। यदि हम अपने घर लौटें तो -

हमें मार सके ये जमाने में दम नहीं।
हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं॥

बात तो यह है लेकिन समझ में आ जाय और हम लोग तैयार हो जायें, वे घड़ियाँ गुरु ढूँढ़ रहे हैं बस। ❑

उत्तरायण की वेला में...

(मकर संक्रांति : १४ जनवरी)

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

मकर संक्रांति के दिन सूर्यदेव का रथ मकर राशि में प्रवेश करता है। हर महीने संक्रांति होती है लेकिन इस महीने सूर्यनारायण मकर राशि में प्रविष्ट होते हैं इसलिए वे कुछ विलक्षण पुण्यकाल का सर्जन करते हैं (वर्ष २०१० के लिए पुण्यकाल १४ जनवरी को १२-३८ बजे से सूर्यास्त तक है)। इस काल में सत्त्वगुण की विशेष अभिवृद्धि होती है, रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाले कण भी विशेष मिल जाते हैं। इस दिन के जप, तप, दान आदि शुभकर्म विशेष फलदायी हैं।

यह पूरा माघ मास ही 'पर्व मास' माना जाता है (माघ स्नान व्रतारंभ : ३१ दिसम्बर से ३० जनवरी। विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद', जनवरी २००९, पृष्ठ ८)। अन्य दिनों में तो गंगास्नान करके आओ तब गंगास्नान का पुण्य होगा लेकिन माघ मास में सूर्यकिरणों का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि धरती के सभी जलाशयों का जल गंगाजल की नाईं पवित्र, हितकारी माना जाता है। अभी तो कई चिकित्सा-विज्ञानी सूर्यनारायण की इस करुणा-कृपा की महिमा का अध्ययन करके उसका अपने चिकित्सा-जगत में प्रयोग कर आश्चर्यकारक परिणाम ले आते हैं।

डॉ. हेज ह्यूकी बोलते हैं कि 'दवाओं से भी ज्यादा फायदा सूर्य की किरणों से होता है। दवाओं से तो हानिकारक जीवाणुओं के साथ-साथ हितकारी जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं।'

डॉ. हेज हैन्ड्रिक ने प्रयोगों से पाया कि सूर्य की किरणें शीघ्र ही शरीर में प्रविष्ट होकर रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाती हैं और जिस रंग की कमी हो उसकी पूर्ति करती हैं।

रंग-चिकित्सक बोलते हैं कि 'पीले रंग की कमी होने से यह-यह बीमारी होती है, बैंगनी रंग की कमी से यह-यह बीमारी होती है' आदि। आयुर्वेदवाले बोलते हैं कि 'वात, पित्त और कफ में फलाने-फलाने रंग होते हैं और सातों रंग सूर्यनारायण की देन हैं।'

गार्डनर रोनी नाम के विज्ञानी ने सूर्य-चिकित्सा से चमत्कारी फायदे उठाये। वह लिखता है कि 'सूर्य-चिकित्सा से शरीर इतना सबल हो जाता है कि हानिकारक कीटाणुओं को निकाल देता है और अपने-आपकी रक्षा करने में सक्षम हो जाता है।' गार्डनर रोनी ने सूर्य-चिकित्सा से बहुत सारे मरीजों को ठीक किया।

मैं उत्तम स्वास्थ्य की एक बढ़िया तरकीब आपको बताता हूँ। सूर्य के प्रकाश में त्रिबंध प्राणायाम कर लें। पाँच प्राणायाम सूर्य की ओर मुख करके करें और पाँच प्राणायाम सूर्य की ओर पीठ करके करें। इससे सारा शरीर सूर्य की किरणों में स्नान कर लेगा। अथवा तो सूर्य के प्रकाश में सूर्यनमस्कार करें। सूर्य से आँख नहीं लड़ाना। नाभि पर सूर्य की किरणें जरूर पड़नी चाहिए। नाभि की तरफ पाँच से आठ मिनट और पीठ की तरफ आठ से दस मिनट सूर्यस्नान करें। लम्बी आयु और उत्तम स्वास्थ्य के लिए सभीको सूर्यस्नान करना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को चर्मरोग और पाचनतंत्र की कई तकलीफें थीं। श्रीकृष्ण ने देखा कि साम्ब ठीक नहीं हो रहा है, तब उन्होंने

उसको कहा कि ''मैंने सूर्यनारायण की उपासना से आरोग्य-लाभ और बहुत लाभ प्राप्त किया है। मैंने सूर्यनारायण का मानसिक ध्यान किया और सूर्य की किरणों में प्राणायाम आदि करके सूर्यस्नान किया है। साम्ब ! तुम भी सूर्य की उपासना करो।''

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने रुग्ण बेटे साम्ब को सूर्यस्नान करने, सूर्य को अर्घ्य देने व सूर्यनमस्कार करके भृकुटी (दोनों भौंहों के बीच का स्थान) में सूर्य का ध्यान करने की सलाह दी। ऐसा करने से रुग्ण साम्ब तंदुरुस्त हो गया।

तो विज्ञानी अभी बोलते हैं लेकिन पाँच हजार वर्ष पहले विज्ञानियों के बाप श्रीकृष्ण ने बोला, उसके पहले हमारे ऋषियों ने कहा है कि सूर्य आरोग्य-प्रदायक है। आज के दिन सूर्यनारायण को मन से प्रणाम करना आरोग्य के लिए विशेष हितकारी होगा। लेकिन हम लोग केवल स्वास्थ्य के लिए सूर्य की उपासना नहीं करते हैं; सूर्य की किरणें त्वचा में प्रविष्ट होकर विटामिन 'डी' दें और त्वचा के रोगों में लाभ हो इसलिए हम सूर्य-उपासना नहीं करते। सूर्यस्नान से भौतिक लाभ तो होगा लेकिन हमारा नजरिया केवल आधिभौतिक लाभ लेकर मरनेवाले शरीर तक सीमित नहीं है। हमारे भारतीय ऋषियों की नजर अमर आत्मा-परमात्मा को प्राप्त करने पर केन्द्रित है और बाकी के ये सहायक फायदे तो ऐसे ही होने हैं।

जैसे सूर्यनमस्कार करते हैं तो प्राणायाम भी हो जाते हैं, आसन भी हो जाते हैं। प्राणायाम से फेफड़ों के बंद छिद्र खुल जाते हैं, आसन से निष्क्रिय अंग सक्रिय होने लगते हैं। सूर्यनमस्कार सूर्योदय के बाद ही किये जाते हैं, ताकि सूर्य की किरणों का लाभ शरीर को मिले और उस समय सूर्य की उपासना से हमारी मति में सात्त्विकता आती है। सात्त्विक मति ही परब्रह्म परमात्मा का अनुभव कर सकती है। अतः उत्तरायण के दिन सूर्य-उपासना का विशेष महत्त्व है। (शेष पृष्ठ ३२ पर)

बापूजी ने दी युक्ति, ऑपरेशन से मिली मुक्ति

मेरी पत्नी को प्रसूति के समय इतनी अधिक तकलीफ हुई कि उसे रात को २ बजे कल्याण (महा.) में 'डॉक्टर मस्कर हॉस्पिटल' में भर्ती कराना पड़ा। डॉक्टर ने कहा : ''आज और अभी प्रसूति होने की सम्भावना है।'' लेकिन सुबह ७ बजे तक बहुत प्रयत्न करने पर भी वे असफल रहे तो बोले : ''बच्चे का सिर और दोनों हाथ अटक गये हैं। इस स्थिति में बच्चे के बचने की सम्भावना बहुत कम है लेकिन माँ को बचाने के लिए ऑपरेशन करना ही पड़ेगा।'' मैंने कहा : ''आप मुझे एक घंटे का समय दीजिये।'' तो वे बोले : ''कोई बात नहीं।''

मैं आठ दिन पहले ही होली शिविर में सूरत गया था, वहाँ गुरुजी ने पहले ही सत्र में एक प्रयोग बताते हुए कहा था कि 'जिसको डॉक्टर बोलें कि ऑपरेशन के सिवाय प्रसूति नहीं हो सकती, ऐसी महिला को यदि देशी गाय के ताजे गोबर का एक चम्मच रस भगवन्नाम का जप करके पिला दिया जाय तो बिना ऑपरेशन के, बिना अधिक पीड़ा के प्रसूति जल्दी हो जाती है।'

मैंने यह प्रयोग श्रद्धा और विश्वास से किया। गाय के गोबर के रस में थोड़ा गंगाजल मिलाया और गुरुमंत्र जपकर पत्नी को पिला दिया। जैसे ही उसने वह रस पिया, तकरीबन २५-३० मिनट में सामान्य प्रसूति हो गयी। यह सुनकर डॉक्टर आश्चर्यचकित होकर बोला : ''१५-२० साल में मैंने ऐसा कभी नहीं देखा कि बच्चा इस तरह से फँस गया हो और बिना ऑपरेशन के सामान्य प्रसूति से पैदा हुआ हो।'' सद्गुरुदेव की कृपा का मैं सदैव ऋणी रहूँगा। – अशोक चंदनमल

बैंक ऑफ इंडिया, उल्हासनगर (महा.)। ❑

मेवों द्वारा बल व स्वास्थ्यप्राप्ति

सूखा मेवा ऊर्जा का नैसर्गिक स्रोत है। इनमें लौह, कैल्शियम, ताँबा, फॉस्फोरस आदि खनिज द्रव्य प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। प्राकृतिक रूप में उपलब्ध इन द्रव्यों से हृदय, मस्तिष्क, नेत्र, गुर्दे, स्नायु, आँतें आदि प्रत्यंगों को बल मिलता है। क्षीण व दुर्बल व्यक्ति तथा अधिक बौद्धिक व शारीरिक परिश्रम करनेवालों के लिए सूखे मेवों का युक्तियुक्त सेवन बहुत लाभदायी है।

१. अखरोट : १० ग्राम अखरोट को गाय के घी में भूनकर मिश्री मिलाकर खाने से स्मरणशक्ति तीव्र होती है। मानसिक थकावट दूर हो जाती है। लहसुन के साथ पीसकर घी में भूनकर खाने से क्षयरोग (टी.बी.) में बहुत लाभ होता है। २० ग्राम अखरोट, मिश्री व केसर दूध में मिलाकर पीने से नपुंसकता में लाभ होता है। मुँह के लकवे में अखरोट के तेल की मालिश करने से आराम मिलता है।

२. अंजीर : अंजीर में लौह प्रचुर मात्रा में होने से रक्त की वृद्धि होती है। यह रक्त की शुद्धि भी करता है। इसमें निहित विटामिन 'ए' नेत्रज्योति की सुरक्षा करता है। अंजीर में पेट के मल को निष्कासित करने की विशेष क्षमता है। पुरानी खाँसी, दमा, टी.बी., रक्तपित्त, पुराना गठिया रोग, बवासीर, पित्तजन्य त्वचाविकारों में अंजीर का सेवन लाभदायी है। २ सूखे अंजीर रात को पानी में भिगोकर सुबह और सुबह भिगोकर शाम को खाने से इन व्याधियों में लाभ होता है।

३. काजू : काजू स्निग्ध, पौष्टिक, वायुशामक, पाचनशक्ति बढ़ानेवाला, जठराग्नि प्रदीपक व शांतिदायक है। सुबह शहद के साथ काजू खाने से दिमाग की कमजोरी मिटती है। किशमिश के साथ सेवन करने से रक्त की वृद्धि होती है। पानी में पीसकर चटनी बनाकर खाने से अजीर्ण, अफरा मिट जाता है। दूध के साथ सेवन करने से हृदय, मस्तिष्क व नाड़ी संस्थान को बल मिलता है।

४. बादाम : स्मरणशक्ति व नेत्रज्योति की वृद्धि के लिए बादाम बहुत उपयोगी है। यह उत्कृष्ट वायुशामक व सप्तधातुवर्धक है। ५ भीगे हुए बादाम छिलके उतारकर २-३ काली मिर्च के साथ खूब पीसकर मक्खन-मिश्री अथवा दूध के साथ सेवन करने से स्मरणशक्ति व नेत्रज्योति बढ़ती है।

अमेरिकन बादाम बलहीन होते हैं, सत्त्व निकाले हुए होते हैं। अगर मामरी बादाम मिल जायें तो रात का भिगोया हुआ १ बादाम खूब पीसकर खाने से १० बादाम खाने की ताकत मिलती है।

बादाम में फास्फोरस प्रचुर मात्रा में होने से यह अस्थियों को मजबूत बनाता है।

बादाम का तेल नाक में डालने से मस्तिष्क को शीघ्र ही बल मिलता है। इससे सिरदर्द भी मिट जाता है। इसका निरंतर प्रयोग हिस्टिरिया में बहुत लाभदायी है। **गर्भवती स्त्री को ९वाँ महीना लगते ही १० ग्राम बादाम का तेल दूध व मिश्री के साथ देने से प्रसव सुलभ हो जाता है।**

५. पिस्ता : सूखे मेवों में आँतों को बल प्रदान करने में पिस्ता सर्वोत्तम है।

सावधानी : सूखे मेवों का सेवन विशेषतः सर्दियों में तथा मात्रावत् करना उचित है। ❑

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२८ अक्टूबर को बोडेली (गुजरात) में गरीबों के लिए भंडारे का आयोजन हुआ। यहाँ के अभावग्रस्तों को अनाज, वस्त्र, मिठाई, बर्तन आदि जीवनावश्यक चीजें बाँटने के साथ भोजन भी कराया गया, नकद दक्षिणा भी दी गयी और पिलाये गये हरिनाम कीर्तन के मधुर घूँट भी।

२९ अक्टूबर से २ नवम्बर तक बड़ौदा में भव्य सत्संग व पूनम-दर्शन महोत्सव आयोजित हुआ। यहाँ के विशाल मैदान में हुए इस महा आयोजन में सम्पूर्ण गुजरात व भारत के विभिन्न प्रांतों से आये जनसमुदाय ने दर्शायी उपस्थिति से इसे महाकुम्भ-सा स्वरूप आ गया था। कर्म-सिद्धांत का रहस्य अपनी अनुपम शैली में विषद करते हुए पूज्यश्री ने कहा :

''बाहर की बरसात आये तो उस बौछार से बचने के लिए रेनकोट और छाता है लेकिन आप गलत करते हो तो देर-सवेर अंतरात्मा की लानत आती है। वहाँ न छाता काम देगा और न रेनकोट ही काम देगा, इसलिए अपने-आपसे बेवफा नहीं होना चाहिए।

लोग कार्यकुशलता उसे मानते हैं कि झूठ-कपट करके कैसे भी धन-संग्रह कर लिया, भोग-सामग्री का संग्रह कर लिया, बड़ा पद पा लिया... बड़ी कार्यकुशलता है ! नहीं-नहीं, कार्यकुशलता यह है कि कर्म तो करें लेकिन कर्तृत्व का अहंकार न आये और सफलता-विफलता में विचलित न हों।''

२ से ४ नवम्बर तक पूनम-दर्शन और सत्संग गाजियाबादवासियों के भाग्य में रहा। ईश्वरप्रीति को सहज में उद्दीप्त करनेवाली डाँट चढ़ाते हुए बापूजी बोले :

''गुलामी करते-करते दिमाग ऐसा बँध जाता है कि कहीं नौकरी न छूट जाय, कहीं बॉस न रूठ जाय, कहीं वह न हो जाय...। अरे ! ईश्वर रूठा रहता है इसकी तुम्हें शर्म नहीं आती और दो पैसे के पुतले को मना-मनाकर मारे जा रहे हो, ईश्वर को एक बार मना लो फिर सारी दुनिया तुम्हें मनाने के लिए पीछे-पीछे घूमेगी।''

८ से १० नवम्बर तक उल्हासनगरवासियों पर बरसी सत्संग की अमृतवर्षा में निहाल हो गये यहाँ के सत्संगप्रेमी सज्जन। बापूजी बोले : ''यौवन, सम्पदा और स्वास्थ्य तब कल्याणकारी हैं जब इन्हें 'स्व' में स्थित होने के लिए लगायें। यौवन, स्वास्थ्य आ गया और भोग में, विकार में, संग्रह में लगाया तो वह यौवन, स्वास्थ्य भी दुःखदायी हो जाता है।''

१४ व १५ नवम्बर को शिवाजी पार्क, दादर में मुंबईवासियों को सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मायानगरी की जनता माया में ही उलझी न रह जाय इसलिए कृपानिधि बापूजी ने जीवन में धन के साथ-साथ सत्संग की अनिवार्यता पर भी जोर दिया। बापूजी बोले :

''धन वहीं शोभा देता है जहाँ सत्संग और ज्ञान का आदर है। अगर सत्संग-ज्ञान का आदर नहीं है तो वह धन धनवान को अहंकारी, विलासी बनाकर रावण की नाईं विनाश की तरफ ले जाता है। सत्ता और धन वहीं शोभा देता है जहाँ संत और सत्संग का आदर है।''

१६ नवम्बर को पूज्यश्री एकांतवास के लिए महाकाल की नगरी उज्जैन में पधारे। एकांतवास में भी पूज्यश्री के दर्शन की आस लिये दूर-दूर से लोगों का आना जारी रहा। सुबह से शाम तक पूज्यश्री की एक झलक पाने की आस में बैठे इन तितिक्षु-मुमुक्षु साधकों के लिए पूज्यश्री हर शाम को अपने सत्संग-ज्ञान का निर्झर खोलते और इस ज्ञान-ध्यान सुधा का पान कर वे बड़भागी साधक कृतकृत्य हो जाते। इन सत्संगों का ऑडियो प्रसारण देश भर के विभिन्न राज्यों-जिलों तथा विदेशों में भी कई जगहों पर होता था। पूज्यश्री के एकांतवास के दौरान हुए सत्संग जिज्ञासुओं के लिए निश्चय ही श्रवणीय हैं।

एकांतवास के बाद बापूजी निकल पड़े गाँव-गाँव में आस लगाये बैठे अपने प्रेमी भक्तों को

सत्संगामृत का पान कराने। बड़नगर के भक्तों की भावभीनी पुकार ने अपना रंग दिखाया और २२ नवम्बर (शाम) को पूज्य बापूजी का बड़नगर में आगमन हुआ। पूज्यश्री के आगमन के ६-६ घंटे पहले से ये भावपूर्ण हृदय पलक पाँवड़े बिछाये अपने भगवत्स्वरूप गुरुदेव के दर्शन के पुण्यमय अवसर का इंतजार कर रहे थे। पूज्य बापूजी के दर्शन पाकर अभिभूत ये भक्तहृदय ऐसे तो सद्भाव, भगवद्भाव, भावसमाधि में तन्मय हुए कि रात्रि के १० कैसे बज गये पता ही नहीं चला ! बापूजी को आखिर इन्हें आग्रहपूर्वक विदाई देनी पड़ी। २३ (शाम) व २४ नवम्बर (सुबह) के इन २ सत्रों में बदनावर तथा २४ (शाम) को कानवन की जनता सत्संग से लाभान्वित हुई। २४ (शाम) को राजपुरा स्थित आश्रम में पूज्यश्री पधारे तो वायुवेग से खबर सारे गाँव में फैल गयी और श्रद्धालु बापूजी के दर्शन हेतु उमड़ पड़े। दूसरे दिन सुबह भी यही दृश्य रहा। राजपुरा व कपासथल निवासियों को सत्संग-दर्शन से तृप्त करते हुए पूज्य बापूजी दसई पहुँचे, जहाँ सत्संग के बाद विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया। २६ व २७ नवम्बर को धार में हुआ सत्संग-आयोजन अपने-आपमें अनूठा रहा। राजा भोज की नगरी धार में बही हरिनाम कीर्तन व भगवत्कथा की अमृतधारा में स्नान कर पावन हुए यहाँ के निवासी। सुखी पारिवारिक व सामाजिक जीवन की कुंजी देते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''जिस घर में भगवान का, साधु-संत का चित्र नहीं है, वह घर श्मशान है। जिस घर में माँ-बाप, बुजुर्ग व बीमार का ख्याल नहीं रखा जाता, वहाँ लक्ष्मी रूठ जाती है। बिल्ली, बकरी व झाड़ू की धूलि घर में आने से बरकत चली जाती है। गाय के खुर की धूलि से, सुहृदयता से, सत्संग से घर का वातावरण स्वर्गमय, सुखमय, मुक्तिमय हो जाता है।''

२७ (शाम) व २८ नवम्बर को मनावर में सत्संग-आयोजन हुआ। ९ साल बाद आत्मवेत्ता, प्राणिमात्र के सुहृद अपने प्यारे बापूजी के दीदार को मनावर और दूर-दराज के गाँवों से लोग उमड़ पड़े। सभी जाति-धर्मों के लोगों के उमड़े हुजूम ने मनावर को ही उज्जैन सिंहस्थ कुम्भ सदृश बना दिया। यहाँ के भक्तों की श्रद्धा-प्रीति और सुरम्य वातावरण ने कुछ ऐसा जादू किया कि पूज्यश्री भी विदाई लेते वक्त बोल पड़े : ''अभी यहाँ से जाना तो है पर जाने का जी नहीं करता।''

२९ नवम्बर (दोपहर) का एक सत्र इन्दौर आश्रम के लिए घोषित हुआ। देखते-ही-देखते यहाँ लोगों का ऐसा हुजूम उमड़ा कि आश्रम के स्थायी पंडाल और बढ़ाये हुए अस्थायी पंडाल दोनों को इन्दौरवासियों ने नन्हा कर दिया। ❑

(पृष्ठ २९ का शेष) इसके अतिरिक्त इस दिन भगवान शिव को तिल-चावल अर्पण करने अथवा तिल-चावल मिश्रित जल से अर्घ्य देने का भी विधान है।

इस पर्व पर तिल का विशेष महत्त्व माना गया है। तिल का उबटन लगाना, तिलमिश्रित जल से स्नान, तिलमिश्रित जल का पान, तिल का हवन, तिल-सेवन तथा तिल-दान - ये सभी पापशामक और पुण्यदायी प्रवृत्तियाँ हैं। उत्तरायण पर्व पर दान-पुण्य का विशेष महत्व है। इस दिन कोई रुपया-पैसा दान करता है, कोई तिल-गुड़ दान करता है। मैं तो चाहता हूँ कि आप अपने को ही भगवान के चरणों में दान कर डालो। उससे प्रार्थना करो कि 'हे प्रभु ! तुम मेरा जीवत्व ले लो... तुम मेरा अहं ले लो... मेरा जो कुछ है वह सब तुम ले लो... तुम मुझे भी ले लो... ।'

जिसको आज तक 'मैं' और 'मेरा' मानते थे, वह ईश्वर को अर्पित कर दोगे तो बचेगा क्या ? ईश्वर ही तो बच जायेंगे... ! ❑

पिछले अंक के स्वाध्याय के उत्तर

(१) 'भगवद्गीता' (२) **सब में एक - एक में सब।** (३) मीठी और हितभरी (४) ब्रह्मनिष्ठ सत्पुरुष (५) सपना, अपना

पूज्य बापूजी के शिष्यों द्वारा निकाली गयीं संकीर्तन यात्राएँ

बड़ौदा (गुज.)

राजकोट (गुज.)

बरेली (उ.प्र.)

शुभारंभ

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से देश-विदेश के युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु शुरू किये गये 'युवा सेवा संघ' का अपने-अपने क्षेत्र में गठन करने हेतु आवश्यक 'युवा सेवा संघ मार्गदर्शिका' तथा 'सदस्यता आवेदन पत्र' आप अपने नजदीकी आश्रम या आश्रम के सत्साहित्य केन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-42/NW/09-11

बड़ौदा में गुजरातवासियों की विशाल मेदिनी ने अपने प्राणप्रिय बापूजी का पुष्पवर्षा द्वारा स्वागत किया व अपने गुरुदेव के दर्शन-सत्संगामृत का तन्मय होकर आस्वादन किया।

गाजियाबाद (उ.प्र.) में हुए पूर्णिमा दर्शन एवं सत्संग कार्यक्रम में उमड़े जनसागर ने सत्संग-कीर्तन से अपने तन-मन-मति को भगवन्मय बनाया।

उल्हासनगर (महा.) में बापूजी के सान्निध्य में बड़ों के अलावा नौनिहालों ने भी आनंद-उल्लास का खजाना पाया।

मायापुरी मुंबई (दादर) में हुए सत्संग-कार्यक्रम में माया के भ्रमजाल से बचने की कुंजियाँ पाते श्रद्धालु।

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.